भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

वीर निर्वाण संवत् - 2536
चैत्र शुक्ल पक्ष वि.सं. 2067 मार्च 2010

अंक : ग्यारह

वर्ष : चार

मूल्य : 10/-

शव नहीं, शिव बनूँ

इस युग के
दो मानव
अपने आपको
खोना चाहते हैं
जिनमें एक
भोग राग को
मद्य पान को
चुनता है
और एक
योग त्याग को
वन्द्य-ध्यान को
धुनता है
कुछ ही क्षणों में
दोनों होते
विकल्पों से मुक्त
फिर क्या कहना
एक शव के समान
पड़ा है
और एक
शिव के समान
भरा है
(खरा उतरा है)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रय गजरथ महोत्सव, सतना (म.प्र.) की झलकियाँ

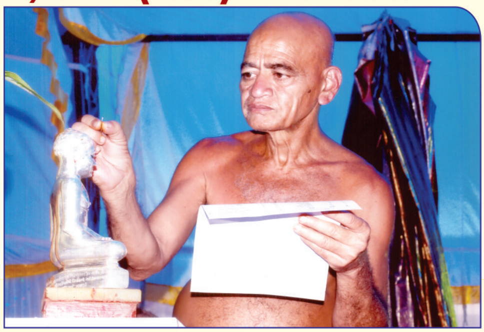

राष्ट्र संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज दीक्षा संस्कार एवं अंक न्यास विधि सम्पन्न करते हुए

गजरथ महोत्सव में पंचकल्याणक मण्डप की परिक्रमा के समय उमड़ा जन सेलाब

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजलि काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
अजित जैन	**अरविन्द जैन**	**अविनाश जैन**	**राजेन्द्र चौधरी**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161				9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेश जैन रज्जन, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, श्री अजित जैन, श्री महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागडिया, **भोपाल :** श्रीमती मना जैन, श्री अनेकांत जैन।

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य **मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज।**

● *परामर्शदाता* ●

डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन

जबलपुर, मोबा.: 9425386179

पंडित मूलचंद लुहाड़िया

किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●

श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल

फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक

F-108/34, शिवाजी नगर, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●

डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली

पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)

इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)

श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन

MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल

फोन : 0755-2673820, 94256 01161

email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष - चार
अंक -ग्यारह

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. सम्पादकीय	श्रीपाल जैन 'दिवा'	2
2. दुनिया और ध्यान	मुनि आर्जवसागर	5
3. विभिन्न धर्मों द्वारा मांसाहार का निरोध	उपाध्याय ज्ञानसागर	10
4. TAO OF JAINA SCIENCES पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों की सम्मतियाँ		12
5. सम्यक ध्यान शतक	मुनि आर्जवसागर	14
6. जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा	डॉ. संजय जैन	15
7. आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव	डॉ. अजित कुमार जैन	19
8. जैन धर्म में कर्म व्यवस्था	मुनि आर्जवसागर	22
9. बच्चों में बढ़ती हिंसा, कषाय : दोषी कौन?	श्रीमति सुशीला पाटनी	27
10. दिगम्बर जैनों से एक होने का आव्हान	सुधीर जैन	28
11. समाचार		31
12. भावविज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता		34

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

समता धर्म

श्रीपाल जैन 'दिवा'

समता सब धर्मों का मूल है। समता के अभाव में धर्म, धर्म नहीं रह पाता।

दर्शन विचार है तो धर्म आचरण का उद्यान है। ऐसा उद्यान जिसमें संयम, त्याग, तप, ध्यान के सुरभित प्रसून खिलते रहते हैं। विचारों को विवेक के साथ आचरण में जिया जाता है। भावना की मार्दव व आर्जव युक्त मनोभूमि में आचरण के बीज बोये जाते हैं जो तप के ताप और ध्यान की छाया में पल्लवित होकर मुक्ति की महिमा से मण्डित करते हैं जीव को।

हम 'समता' शब्द को देखते हैं तो उसका प्रथम वर्ण 'स' सरलता के दर्शन कराता है। लगता है 'सरलता' सिर के बल चलकर 'समता' के घर आती है। और उसमें समाहित होकर निज का विलय कर धन्य हो जाती है। बिना 'सरलता' के 'समता' का अस्तित्व सम्भव ही नहीं है। सरलता का सद्भाव ही 'समता' के महल की मजबूत नींव है। सरलता के सद्भाव से ही अहं का हिमालय विगलित होकर विनम्रता और शुचिता की गंगा-यमुना बहाता है। अहं का विगलन ही तो आकिंचन्य का सद्भाव है। और आकिंचन्य ही स्वयं में रमने-जमने का अमूल्य अवसर प्रदान करता है जीव को। सरलता, शान्ति की भी जननी है। शान्ति का साम्राज्य सरलता के कन्धों पर ही तो टिका रहता है। और शान्ति के साम्राज्य में ही आत्म सुख का विकास होता है । इसीलिए कहा है 'सरल बनो' - 'सुखी रहो'। दुःख का अभाव करने का मूल मंत्र ही है 'सरल बनो' अतः जहाँ सरलता है वहाँ समता का सद्भाव होता ही है। और जहाँ समता विद्यमान है वहाँ सुख-शान्ति का साम्राज्य होता ही है। 'समता' ही मोक्ष महल को ले जाने वाला सरल-सपाट राजमार्ग है।

'समता' शब्द में दूसरा वर्ण 'म' है 'म' तीन मकारों को नकारने का शुभ आचरण करने की प्रेरणा देने का शुभ कार्य करता है। मद्य-मांस-मधु ये तीन मकार हैं। तीनों का त्याग जीव को अहिंसक बनाता है। श्रावक है तो इन तीनों का त्याग तो होगा ही। जिसके जीवन में तीन मकारों का त्याग नहीं है वहाँ सरलता का सद्भाव हो ही नहीं सकता। सरलता के अभाव में समता का भी अभाव हो जाता है। और समता का अभाव ही संसार बढ़ाने वाली घातक दुखद घटना है। समता इससे बचाती है।

'म' वर्ण अष्ट मदों की भी याद दिलाता है। वे अष्टमद हैं -

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपो वपुः।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मय माहुर्गतस्मयाः ।।

(रत्नकरण्डक श्रावकाचार पृ. ६३ श्लोक २५)

(1) ज्ञानमद (2) पूजामद (3) कुल मद (4) जाति मद (5) बल मद (6) ऋद्धि मद (7) तप मद (8) शरीर मद । इन अष्टमदों में संसार के सभी मद समाहित हैं। समता का सद्भाव इन अष्ट मदों का भी अभाव करता है। इन मदों के अभाव में ही 'समता' फलती-फूलती है। तभी मोक्ष महल का राजमार्ग निर्बाध होता है। अन्यथा मदों के सद्भाव में जीव संसार में ही भटकता रहता है। यह

'मद' ही दर्प (झूठा घमण्ड) है यह मद ही अहं का हिमालय है। यह मद ही पतन का राजमार्ग है। पर 'समता' के घर इन सब मदों का अभाव हो जाता है। यद्यपि मदों के अभाव की स्थिति बनाना सरल नहीं है पर असम्भव भी नहीं है। संयम और तप का ताप मदों के विकार को भस्म करने में समर्थ है। संयम और समता की शरण जाना पड़ेगा। मद का मारा केवल समता की शरण में ही सुरक्षित है।

समता का शब्द का अंतिम तीसरा वर्ण 'ता' है जो 'समता' का उलट 'तामस' के रूप में उपस्थित है। यह अज्ञान के अन्धकार का प्रतीक है। इसके सद्‌भाव में समता का अभाव होता है। तब जीव तामसी वृत्तियों के जाल में फँसता जाता है। वह शाकाहार से दूर मांसाहार के निकट पहुँच जाता है। तीन मकारों से ग्रसित होने लगता है। अष्ट मदों से मदमत्त हो अहं के हिमालय पर जा विराजता है। वह नर्क जाने वाले पाप मार्ग पर तीव्र गति से चलने लगता है। उसे केवल गुरुओं का सत्संग ही बचा सकता है। निर्ग्रन्थ साधु ही उसे ग्रंथी विहीन बना सकता है। पाप मार्ग से हटने की देशना वही दे सकते हैं जो पाप मार्ग से स्वयं हटे हुए हैं और संयम मार्ग पर आरूढ़ हैं। उनकी शरण ही सच्ची शरण है वही 'समता' के दर्शन करा सकते हैं जो स्वयं समताधारी हैं। बिना 'समता' के कल्याण सम्भव नहीं है।

समतावान प्रकृति प्रेमी होता है। प्रकृति के साहचर्यजन्य प्रेम से सभी जीव आप्लावित रहते हैं। जमीन, जंगल और जल प्रकृति के तीन प्रमुख अंग हैं। इनकी रक्षा में ही जीव मात्र की सुरक्षा है पर्यावरण की सुरक्षा के भाव का अभाव वर्तमान की विकट समस्या है। घोर प्रदूषण ने पर्यावरण की शुद्धता को प्रभावित किया है। मनुष्य निर्मित कल कारखानों की चिमनियाँ घातक गैसें उगल रही हैं आकाश में 'ओजोन' रक्षा परत क्षतिग्रस्त हो रही है। सूर्य की हानिकारक किरणें सीधे पृथ्वी के जीवों के सम्पर्क में आकर कैंसर, लकवा आदि बीमारियों की जननी बन रही हैं वातायन के ताप में वृद्धि के कारण उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव पिघलकर समुद्र के जल स्तर को बढ़ा रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप समुद्रतटीय देश नगर व द्वीपों के जल मग्न होने का खतरा मँडरा रहा है। जमीन और पहाड़ों के वृक्षों की अँधाधुंध कटाई ने वर्षा के अभाव की विकट स्थिति बना दी। उन क्षेत्रों में अकाल की स्थिति बन रही है। जल स्तर नीचे जा रहा है। पेयजल की घोर समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हो रही हैं। इन सब विपदाओं का पर्यावरण के प्रति मनुष्य की उदासीनता व घोर उपेक्षा करना है। हमारे देश में जनता सजग हो रही है। उसका उदाहरण अभी का होलिका पर्व है। इस पर्व पर सजग लोगों ने सूखी होली-टीका होली मनाने का अभियान चलाया जिसमें जल के अपव्यय का अंकुश लगा। लोगों ने इस जल बचाओ अभियान को मान्यता देकर टीका होली मनाई। इसी तरह होलिका दहन हेतु वृक्षों की कटाई पर भी विराम लगाया। वृक्षों की सुरक्षा यानी वनों की सुरक्षा। वनों की सुरक्षा से ही वर्षा का सद्‌भाव होता है। ये सकारात्मक अभियानों में लोक रुचि पैदा हो जाना ही अभियान की सफलता है। वे लोग धन्य हैं जो जल जंगल और जमीन की सुरक्षा में रुचि रखते हैं इनकी सुरक्षा करना ही अहिंसा का पालन करना है। समतावान बनने का सुमार्ग है। सभी जन उन धन्य लोगों का अनुकरण कर मानवता की रक्षा में सहयोग करें सभी जन 'समतावान' बनें इस मंगल भावना के साथ समता धर्म की जय।

समता धर्म के धुरंधर धारक परम प्रवर्तक भगवान महावीर स्वामी की जन्म-जयंती इस वर्ष

२८ मार्च को है जयंती मनी पर उनको हमने कितनी मानी, इसका अवलोकन करना, मनाने की शुभ क्रिया से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वैसे हम शुभ क्रियाओं का ताम-झाम भव्य रूप से खड़ा करते हैं। अच्छा स्वाँग करते हैं। पर विवेक के साथ समता धर्म को आचरण में कब आचरित करेंगे। समता धर्म को विवेक के साथ जियेंगे कब? संसार से आसक्ति के घोर आधिक्य से उदासीनता का शुभारंभ कब करेंगे? जो करे सो निहाल। ऐसा शुभारम्भ महावीर जयंती से २३ वर्ष पूर्व मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ने किया था। तब दिगम्बरी सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जी में परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ विराजमान थे। उन्होंने अपने योग्य शिष्यों को मुनि दीक्षा देकर समता मार्ग पर चलने की देशना दी थी। मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज का वर्तमान महावीर जयंती दिवस २३ वाँ दीक्षा दिवस है। समता के धुरंधर-धारी मुनि श्री धर्म प्रभावना में निष्णात जीव मात्र के परम हितैषी हित-मित-प्रिय जिनकी वाणी, उपसर्ग एवं अन्तरायों से निर्भय और निश्चिन्त, सिंह वृत्ति के धारक, साक्षात लघु विद्यासागर हैं। सरलता के धनी, मकार और मद दूर खड़े दर्शन करके अपने को धन्य मानते हैं। सदाचरण चरण चूमते हैं। समता धर्म जिनके हृदय में बसा है। ऐसे मुनि श्री आर्जवसागर जी पत्थर की नगरी से निकले हीरे हैं। जिन्हें आचार्य श्री विद्यासागर जी जैसे जौहरी ने परखा और अपने स्पर्श से खरा सोना बना दिया। उनके चरणों में हम सबका शत-शत बार नमन।

हम भी भगवान महावीर बनें (मीठे वाक्यामृत)

- ❖ संसार के सभी प्राणी समान हैं, कोई भी प्राणी छोटा सा बड़ा नहीं है।
- ❖ सभी प्राणी अपनी आत्मा के स्वरूप को पहिचान कर स्वयं भगवान बन सकते हैं।
- ❖ यदि संसार के दुःखों, रोगों, जन्म-मृत्यु, भूख-प्यास आदि से बचना चाहते हो तो अपनी आत्मा को पहचान लो, समस्त दुःखों से बचने का एक ही इलाज है।
- ❖ दूसरे के साथ वह व्यवहार कभी मत करो जो स्वयं को अच्छा न लगे।
- ❖ जो वस्त्र या श्रृंगार देखने वाले के हृदय को विचलित कर दे, ऐसे वस्त्र श्रृंगार सभ्य लोगों के नहीं हैं, सभ्यता जैनियों की पहचान है।
- ❖ किसी प्राणी को मारकर बनाए गए प्रसाधन प्रयोग करने में प्रयोग करने वाले को भी उतना ही पाप लगता है जितना कि किसी जीव को मारने में।
- ❖ मद्य-मास-मधु (शहद) - पीपल का फल, बड़ का फल, ऊमर का फल, कठूमर, पाकर (अंजीर), द्विदल (दही-छाछ की कढ़ी, दही-बड़ा आदि) को खाने में असंख्यात त्रस जीवों का घात होने से मांस भक्षण का पाप लगता है।
- ❖ संसार के सभी प्राणी मृत्यु से डरते हैं, जैसे - हम स्वयं जीना चाहते हैं वैसे ही संसार के सभी प्राणी जीना चाहते हैं, इसलिए ''स्वयं जीओ और औरों को जीने दो।''
- ❖ आत्मा का कभी घात नहीं होता, आत्मा का नाश नहीं होता, आत्मा तो अजर अमर है।
- ❖ दूसरों के दुर्गुणों को न देखकर उसके सद्गुणों को ग्रहण करने वाला ही सज्जन है।
- ❖ दूसरों की सेवा करके सभी प्राणी महान बन सकते हैं-कमजोरों की सेवा करना मनुष्य का कर्तव्य है।

संकलन : सुशीला पाटनी, किशनगढ़

प्रवचन - दुनिया और ध्यान

मुनि आर्जवसागर

सद्धर्म बन्धुओं,

इस जगत में सबसे उत्कृष्ट अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने वाला सुख और शान्ति का प्याला पिलाने वाला वह समीचीन ध्यान है। हमें अपना व्यवहारिक परिचय भी जानना जरूरी है। फिर व्यवहार को समीचीन व्यवहार रूप करते हुए हम परमार्थ पर पहुँचने की साधना, भावना करें और वैसा मार्ग अपनायें जैसा कि अपने पूर्व मुनि, ऋषियों ने अपनाया था। निश्चय को पाकर के वे अपनी आत्मा को निर्मल बना करके परमात्मा के रूप में अनन्त सुख में लीन हो गये। हम भी वह सुख पा सकते हैं लेकिन उन जैसी प्रक्रिया, उन जैसा पुरुषार्थ, उन जैसी साधना करने की जरूरत है। मध्यलोक में जो एक लाख योजन वाला जम्बूद्वीप है उसमें भरत क्षेत्र का विस्तार 526 $\frac{6}{19}$ योजन है, जहाँ पर हम छः खण्डों के विभाग में आर्यखण्ड में हम विराजित हैं। यहाँ पर वर्तमान में पञ्चम काल चल रहा है। तीर्थंकरों का अभाव है, लेकिन आज भी तीन परमेष्ठियों का सद्भाव है आचार्य, उपाध्याय, साधु हमारे सामने विराजमान हैं। भरत क्षेत्र में अभी हमारे सामने तीर्थंकर नहीं होते हुये भी हम उनको परोक्ष में नमस्कार करते हैं विदेह क्षेत्र में तो प्रत्यक्ष विद्यमान हैं उनकी दिव्यध्वनि हमारे जीवन को सार्थक बनाती है। वह दिव्यध्वनि द्वादशांग के रूप में रचित होकर के आज भी परम्परानुसार हमें हजारों शास्त्रों में आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित होकर के मिली है। कम-से-कम आज जैन धर्म के शास्त्रों को अगर गिना जाय तो लगभग 10,000 शास्त्र हो सकते हैं। लेकिन आज हम विचार करें कि जैन धर्म जानने के लिए आज तक हमने 5, 10 शास्त्रों का भी अध्ययन किया है क्या? नहीं। 10,000 में से 5, 10 भी शास्त्र नहीं पढ़ पाए तो बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। इसलिए हमें कम-से-कम 5,10 शास्त्र तो पढ़ना ही चाहिए जैसे 1. छहढाला 2. तत्त्वार्थ सूत्र 3. रत्नकरण्डक श्रावकाचार 4. उत्तर पुराण 5. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा और 6. ज्ञानार्णव जो ध्यान का उत्कृष्ट शास्त्र है। अगर ये 6 शास्त्र हमने पढ़ लिये तो हमने जैन धर्म के मर्म को संक्षिप्त में समझ लिया है समझो। कौन-कौन भव्य पढ़ना चाहते हैं?(बहुत लोगों ने हाथ ऊपर उठा दिये और अपनी आस्था का परिचय दिया) क्योंकि ध्यान करने के लिए हमें ज्ञान भी चाहिए। कुछ मटेरियल चाहिए जिसमें अपने मन को रमा सकें। हम इस आर्यखण्ड स्थित भारत देश में हैं। हिन्दू धर्म के एक महान शास्त्र ''महाभारत'' में कहा है कि - ''हम उन वृषभनाथ को नमस्कार करते हैं जो नाभिराय और मरुदेवी के पुत्र थे। जिनके ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का भारत नाम पड़ा।'' भरत चक्रवर्ती छःखण्ड का अधिपति हुआ था। प्रथम तीर्थंकर का पुत्र था। उनके नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा ऐसा कहा है। तो जहाँ से हमारे तीर्थंकरों ने मुक्ति पायी,

जन्म लिया अयोध्या नगरी उनका जन्म स्थान रही। अनादि काल से सभी तीर्थंकरों का जन्म स्थान अयोध्या नगरी रहा और अनादि काल से सम्मेदशिखर जी मुक्ति का स्थान रहा। लेकिन वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल की वजह से तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या को छोड़कर अन्य जगह से भी हुआ और अन्य जगह से मोक्ष भी हुआ। चार तीर्थंकर अन्यत्र स्थान से जैसे श्री आदिनाथ जी कैलाश पर्वत से, श्री वासुपूज्य जी चम्पापुरी से, श्री नेमिनाथ जी गिरनारजी पर्वत से और श्री महावीर भगवान पावापुरी से मोक्ष गये हैं। शेष 20 तीर्थकरों ने सम्मेदशिखरजी से मोक्ष पाया है। सामान्य केवलियों के तो मोक्ष स्थान या सिद्ध भूमियाँ पूरे भारत में हैं और इस ढाईद्वीप में सभी जगह प्रायः सिद्ध क्षेत्र माना जाता है उनके लिए कोई स्थान का बन्धन नहीं है। इस प्रकार ऐसे क्षेत्र पर जहाँ पर ऋषि, मुनि आज भी विद्यमान हैं, ध्यान करते हैं और अपनी ध्यान की रश्मियों को इस भूमि पर बिखराते रहते हैं। और जिन्होंनें सिद्ध पद पाया उन जीवों ने भी इस भूमि को पावन पुनीत किया है और अपनी आध्यात्मिक वर्गणाओं को इस भूमि पर बिखेरा है। जहाँ पर हम लोग जा करके स्वयमेव अपने आप ध्यान में लवलीन होने लग जाते हैं, इस भूमि का बड़ा प्रभाव है। कई विदेशी लोग तो यहाँ आकर के ध्यान के केन्द्रों में ध्यान करना सीखने लगे हैं और इस धरा की पावन पुनीत पवित्रता के गुण गाते हैं। तो ऐसा हमारा यह भारत देश है। ऋषि, मुनियों का विहार पूरे भारत में होता है, लेकिन आप लोगों का गमन पूरे भारत में तो नहीं; हाँ; करते भी होंगे, लेकिन आपका मोह आपका सम्बन्ध किसी एक स्थान से होता है। ऋषि, मुनियों के पैर चलते हैं लेकिन मन स्थिर होता है और आपके पैर स्थिर होते हैं लेकिन मन चंचल होता है। देखिए कितना बड़ा फर्क है। ऋषि, मुनि कहीं भी चले जायँ उन्हें अपनी आत्मा में रमने के लिए बहुत प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती, ज्यादा उद्यम के बिना ही सहजता से अपनी आत्मा में रमना हो जाता है। क्योंकि उनका कोई अटेचमेन्ट (सम्बन्ध) नहीं है किसी भी पदार्थ से, जैसा कि आपका सम्बन्ध है। इसलिए आप जैसे राग, द्वेष भी नहीं होते। कारण कि वे अपनी आत्मा का सम्बन्ध रखते हैं धर्म से, धर्म उपकरण के साथ रहते हैं। वे उपकरण भी ''उपकारम् करोतीति उपकरणम्'' पिच्छि, कमण्डल और शास्त्र है बस, और क्या चाहिए उनको? जहाँ कहीं जिनालय मिल गया, धर्मशाला मिल गयी, गुफा मिल गयी, पर्वत या जंगल मिल गया बस वहीं पर ध्यान करते रम जाते हैं। एक स्थान से मोह नहीं रखते हैं वे। ''बहता पानी रमता जोगी'' वाली बात रहती है। ऐसे मुनि लोग रहते हैं और वे मोक्षमार्गी को ही अपने साथ में रखते हैं जो उन जैसी साधना करता है, गम्भीरता से वैराग्य के साथ अपनी आत्म साधना में लवलीन होना चाहता है। ऐसे वैरागी को ही वे अपने साथ लेते हैं या मार्ग दर्शन देते हैं और मोक्षमार्ग में शिष्यों का अनुग्रह करते हुए स्व-पर कल्याण में निरत होते हैं। हाँ, वास्तव में ठीक भी है कि जहाँ पर मन की एकता हो, जहाँ एक प्रकार की साधना हो तो जोड़ी बनाने में कोई बात नहीं है। आप लोग कहते ही रहते हैं कि -

''चित्त मिले तो चेला कीजे, मित्र मिले तो मेला।
साधु मिले तो संगत कीजे, सबसे भलो अकेला।।''

इस प्रकार से ये बात आप लोग जानते हैं कि चित्त की एकता ही धर्म की उन्नति में सहायक है। हम ये भी समझें कि हम कौन हैं? हम एक संज्ञी पञ्चेन्द्रिय प्राणी मनुष्य हैं उसमें भी जैन कुल के संस्कारों से संस्कारित हैं। जैन कोई जाति नहीं है, जैन एक धर्म है। इसका कोई भी पालन कर सकता है किसी भी व्यक्ति द्वारा इस धर्म की शरण लेने के लिए अपनी भावना प्रकट की जा सकती है गुरुओं ने ऐसा उपदेश दिया है। जैन धर्म किसी एक जाति से नहीं बंधा हुआ है, ये तो जीव मात्र के लिए है, कोई भी इसका पालन कर सकता है और करते ही हैं, दीक्षित भी होते हैं और दूसरे खण्डों से चक्रवर्ती के साथ भी कई लोग आये थे दीक्षित भी हुये थे। भगवान के समवसरण में शरण पाने वाले मानव की तो बात ही अलग है जहाँ तिर्यञ्च भी आकर के इस धर्म की शरण को पाते हैं और अणुव्रत तक पा लेते हैं ऐसे इस धर्म की महिमा बहुत ही महान है। हम सब मनुष्य हैं, मनुष्य होकर के भी जैन धर्म के संस्कारों से संस्कारित होने के कारण हम भव्य भी हैं। हमें बस एक ही अपने अन्दर भावना रखना है कि मेरा जो लक्ष्य मोक्ष है वह शीघ्र मिले। हम मोक्ष लक्ष्य रूपी मञ्जिल को प्राप्त कर अनन्तसुख पाना चाहते हैं यही श्रेष्ठ भावना है न कि इस ध्यान के माध्यम से संसार का सुख मिले। संसार के सुख-सामग्रियाँ तो अज्ञानी चाहते हैं। लेकिन हम चाहते हैं हमें इन पापों से मुक्ति मिली है और सब संसार से भी मुक्ति मिले, कषाय, राग, द्वेष से परे होकर के भगवान जैसे बनकर के हम लोक की अन्तिम ऊँचाई पर पहुँचकर सिद्धालय में बस जायें और कर्म, नोकर्म, भावकर्म सबसे रहित होकर के अशरीरी बनकर अनादि कालीन इस संसार का अन्त करके हम अनन्त सुखी बनकर के अनन्तकाल तक लिए वहीं पर विराजमान हो जायें ऐसी मंगल भावना को लेकर के हम यहाँ पर बैठे हैं। अतः आसन्न भव्य भी हो सकते हैं,भव्य किसको कहते हैं? तो पद्मनन्दी पञ्चविंशतिका में पद्मनन्दी आचार्य कहते हैं कि-

तत्प्रतिप्रीतिचित्तेन, येनवार्तामपिश्रुता।
निश्चितं सा भवेत् भव्यो, भावि निर्वाण भाजनम्।।

जो प्रीति चित्त के साथ धर्म की वार्ता को सुनता है वह भव्य है। वह नियम से आगे निर्वाण का भाजक होगा। आप लोग भी भव्य हैं क्योंकि आप लोग भी यहाँ पर बहुत उत्साह के साथ इस धर्मामृत का पान कर रहे हैं। इसलिए आप भव्यत्व से परे नहीं हैं। यहाँ तक हम कह सकते हैं कि भव्य का मन बहुत निर्मल होता है, धर्म को सुनकर के वह पिघल जाता है। संसार को तजने के लिए वह उत्सुक होता है और मोक्षमार्ग पर चलने के लिए उत्साहित होता है। और अभव्य के लिए कभी इस बात का कोई भाव नहीं आता, उसके मन में यह जिज्ञासा भी नहीं होती कि मैं भव्य हूँ या अभव्य

हूँ मुझे मोक्ष मिलेगा कि नहीं मिलेगा? लेकिन इस प्रकार का चिंतन जिसके मन में आता है वह निश्चित रूप से भव्य ही है। और कुछ लोग यह सोचते हैं कि भव्य होकर के सब लोग मोक्ष चले जायेंगे तो यहाँ पर कौन रहेगा? महाराजजी को आहार कौन देगा? यह भव्य का लक्षण नहीं है। आप लोगों को तो ऐसा चिंतन नहीं है न! भव्य जीव को मूंग के समान कहते हैं क्योंकि वह पानी में डालने से, उबालने से, सीज जाती है या मुलायम हो जाती है और उसी में एक और मूंग होती है उसको कितना भी पानी डालो तो वह सीजती नहीं है। उसको टर्रा मूंग बोलते हैं। कन्नड़ में कल्लकालु कहते हैं, तमिल में कल्लपयिरू बोलते हैं और मराठी में खुच्चर मूंग कहते हैं ऐसे विभिन्न देशों की भाषा में तरह-तरह से पुकारते हैं। अभव्य तो टर्रा मूंग के समान हैं। टर्रा मूंग के समान इस सभा में शायद कोई नहीं होंगे क्योंकि सब लोग प्रवचन में आ रहे हैं, बड़ी रुचि से सुन रहे हैं, आपकी आत्मा में तो परिवर्तन आया है आपने अपना कदम आगे बढ़ाया है दिशा और दशा परिवर्तित होकर के ''दृष्टि बदली सृष्टि बदली बदल गया सारा जीवन मेरा'' वाली बात हो रही है। आप लोग भव्य हैं नियम से, आपकी ऐसे ही दृष्टि बदलती जायेगी तो क्या बात कहें सब कुछ बदल जायेगा। बस सृष्टि की एक शाश्वत अवस्था है वह जैसे की तैसे ही रहेगी लेकिन हम उसकी ओर से मोह, ममता दूर करके अपनी ऊर्जा का संचार अन्तस् की ओर कर लें, जो ऊर्जा हमारी बाहर की ओर बह रही है अशुभ ध्यानों के माध्यम से व्यर्थ हो रही है, हमारी वह ऊर्जा बहिर्-गामनि हो रही है वह अन्तस् की ओर बहेगी तब हमारे अन्दर एक नई क्षमता आयेगी। अनन्त शक्तियाँ जागृत होंगी और एक दिन कभी केवलज्ञान भी हो सकता है ऐसे समीचीन ध्यान के माध्यम से। वह समीचीन ध्यान क्या है? उसे ही हम समझने जा रहे हैं। लोक का हरेक प्राणी ध्यान कर रहा है अनादिकाल से। और यह ध्यान चौबीस घंटे चल रहा है आप सोचेगें कि जब हम आसन लगाकर बैठेंगे तभी ध्यान होगा; लेकिन आप जब खा रहे हें, पी रहे हैं, तब भी ध्यान चल रहा है। दुकान में हैं तब भी ध्यान चल रहा है और सोते समय भी चल रहा है, सो रहे हैं तो ध्यान नहीं चल रहा है ऐसा नहीं है, ध्यान तो हर समय चलता रहता है हर समय हरेक प्राणी कोई न कोई प्रकार का ध्यान करते रहते हैं। और वह भी एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक। बस इस जगत में कोई जीव ध्यान से परे हैं तो वे हैं सिद्धात्मा। उनका कोई ध्यान नहीं, ध्यान कारण है, अब तो कार्य की प्राप्ति हो गई, साध्य की प्राप्ति हो गई अब साधन की आवश्यकता नहीं है। जब पार हो गये समुद्र से तो नाव की क्या आवश्यकता है? नाव के बिना भी पार नहीं होते और नाव को छाड़े बिना भी पार नहीं होते तो नाव में बैठना तो पड़ेगा, ध्यान करना पड़ेगा लेकर पार हो गये तो फिर ध्यान की आवश्यकता नहीं अब तो स्वाभाविक अवस्था में पहुँच गये। ध्यान तो मन से होता है या इस आत्मा से, लेकिन ध्यान में कर्मों का क्षय करना ही एक उद्देश्य होता है। जब कर्मों का क्षय हो गया तो अनादि कालीन कर्म छूट गये और अब अनन्त काल तक लिए स्वाभाविक अवस्था हो गई

स्वच्छ दर्पणवत और वह स्वच्छ निर्मल केवलज्ञान दर्पण सभी पदार्थों को दिखा रहा है, सभी पदार्थ स्पष्ट झलक रहे हैं अब देखने की आवश्यकता नहीं सब अपने आप झलकते हैं। दर्पण किसी को चलाकर नहीं देखता, अपने आप युगपत् झलकते हैं सब। ऐसे ही अरहन्त केवली के ज्ञान में सिद्धों के ज्ञान में सब पदार्थ युगपत् झलकते हैं। व्यवहार से कहो तो दर्पण देखता है ऐसे ही भगवान सर्वज्ञ हैं ये व्यवहार है, निश्चय से तो वे आत्मज्ञ हैं। वे किसी को नहीं देखते बल्कि सब दिख जाते हैं। जो एक को जानता है वह सब को जानता है। प्रवचनसार में यही बात कहते हैं कुन्दकुन्द आचार्य कि जो आत्मा को जानता है वह सब को जान सकता है। जो सब को जान सकता है वह एक को (आत्मा को) भी जान सकता है। जो आत्मा को नहीं जानता वह सब को नहीं जानता, जो सबको नहीं जानता वह आत्मा को भी नहीं जान सकता है। तो सर्व प्रथम सब को जानने से केवलज्ञान नहीं होता है। केवलज्ञान तो अपने को जानने से होता है। ''एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय'' अपनी आत्मा की साधना करने से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है और सब विषय भोगों को जानते रहेंगे तो जीवन बीत जायेगा लेकिन वह केवलज्ञान नहीं मिलेगा। तो निर्ग्रन्थ बन अन्तर दृष्टा बनो या शुभ ध्यानों से अपनी ऊर्जा को अन्दर की ओर बहाओ। बाहर से उसका वेस्टेज मत करो यही ज्ञानीपन है। कहा ही है कि -

दुनिया के जितने मजे हें, वे हरगिज न कम होंगे।
वे तो यहाँ पर होंगे, लेकिन हम यहाँ न होंगे ।।

।। महावीर भगवान की जय।।

मोबाईल पर एक मैसेज

भाव विज्ञान परिवार के सदस्यगण अगर अपने मोबाईल पर मैसेज (एस.एम.एस.) के माध्यम से मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के विहार में प्रस्थान एवं संभावित कार्यक्रम की जानकारी लेना चाहें तो सम्पर्क करें :-

डॉ. महेन्द्र जैन जोबनेर, जयपुर, राजस्थान से जिनके मोबाईल (09829199926) पर कॉल कर अपने निवेदन के साथ अपना पता और मोबाईल नम्बर प्रेषित करें।

धन्यवाद!

विभिन्न धर्मों द्वारा मांसाहार का निषेध

उपाध्याय ज्ञान सागर

विश्व के सभी धर्मशास्त्रों व महापुरुषों ने प्राणी मात्र में उस परमपिता परमात्मा की झलक देखने को कहा है व अहिंसा को परम धर्म माना है। अधिकांश धर्मों ने तो विस्तार पूर्वक मांसाहार के दोष बताये है और उसे आयु क्षीण करने वाला व पतन की ओर ले जाने वाला कहा है। और किसी भी निरीह प्राणी की हत्या का निषेध तो सभी धर्मों ने किया है। किन्तु अपने स्वाद व इन्द्रिय सुख को ही परम ध्येय समझने वाले अपने स्वार्थ वश यह प्रकट करते है कि उनके धर्म में मांसाहार निषेध नहीं है। लेकिन यह असत्य है।

हिन्दू धर्म - हिन्दू धर्म शास्त्रों ने एकमत से सभी जीवों को ईश्वर का अंश माना है व अहिंसा, दया, प्रेम, क्षमादि गुणों को अत्यधिक महत्व दिया है। मांसाहार को बिल्कुल त्याज्य, दोषपूर्ण, आयु क्षीण करने वाला व पाप योनियों में ले जाने वाला बताया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भीष्म पितामह ने मांस खाने वाले, मांस का व्यापार करने वाले व मांस के लिये जीव हत्या करने वाले तीनों को दोषी बताया है। उन्होंने कहा कि जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है वह जहाँ कहीं भी जन्म लेता है चैन से नहीं रह पाता। जो अन्य प्राणियों का मांस खाते है वे दूसरे जन्म में इन्हीं प्राणियों द्वारा भक्षण किये जाते है। जिस प्राणी का वध किया जाता है वह यही कहता है ''मांस भक्ष्यते यस्माद भक्षष्यिते तमप्यहम्'' अर्थात् आज वह मुझे खाता है तो कभी मैं उसे खाऊँगा।

श्रीमद् भागवत गीता में भोजन की तीन श्रेणियाँ बताई गई हैं। (1) **सात्विक भोजन** : जैसे फल, सब्जी, अनाज, दालें, मेवे, दूध, मक्खन इत्यादि; जो हर प्रकार की अशुद्धियों से शरीर, दिल व मस्तिष्क को बचाते हैं। (2) **राजसिक भोजन** में अति गर्म, तीखें, कड़वे, खट्टे, मिर्च मसाले आदि जलन उत्पन्न करने वाले, रूखे पदार्थ शामिल हैं। इस प्रकार का भोजन उत्तेजक होता है व दुःख, रोग व चिन्ता देने वाला है। (3) **तामसिक भोजन** जैसे बासी, रसहीन, अर्ध पके, दुर्गन्ध वाले, सड़े, अपवित्र नशीले पदार्थ माँस इत्यादि जो इन्सान को कुसंस्कारों (वासनाओं) की ओर ले जाने वाले, बुद्धि भ्रष्ट करने वाले रोगों व आलस्य इत्यादि देने वाले होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि मांसाहार से मनुष्य का स्वभाव हिंसक हो जाता है। जो लोग मांस भक्षण व मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दूषित हो जाते हैं।

इस्लाम धर्म : इस्लाम धर्म के सभी सूफी संतों ने नेक जीवन, दया, गरीबी, सादा भोजन व मांस न खाने पर बहुत जोर दिया है स्वयं भी वे मांस से परहेज करते हैं। शेख इस्माइल, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, हजरत निजामुद्दीन औलिया, बू अली कलन्दर, शाह इनायत, मीर दाद, शाह अब्दुल करीम आदि सूफी सन्तों का मार्ग नेकचलनी आत्म संयम शाकाहारी भोजन व सबके प्रति प्रेम का था। उनका कथन है कि ''ता बयानी इर बहिश्ते अदूनजा शफकते, अनुमाए व खल्के खुदा'' कि अगर तू

सदा के लिए बहिश्त में निवास पाना चाहता है तो खुदा की खल्लत (सृष्टि) के साथ दया व हमदर्दी का बरताव कर। ईरान के दार्शनिक अलगजाली का कथन है कि रोटी के टुकड़ों के अलावा हम जो कुछ भी खाते है वह सिर्फ हमारी वासनाओं की पूर्ति के लिये होता है।

ईसाई धर्म - ईसा मसीह को आत्मिक ज्ञान ''जान द वैपटिस्ट'' से प्राप्त हुआ था जो मांसाहार के सख्त विरोधी थे। ईसा मसीह की शिक्षा के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं ''तुम जीव हत्या नहीं करोगे'' और अपने ''पड़ौसी से प्यार करोगे''। ''गॉस्पल ऑफ पीस ऑफ जीसस क्राइस्ट'' में ईसा मसीह के वचन इस प्रकार हैं ''सच तो यह है कि जो हत्या करता है, वह असल में अपनी ही हत्या कर रहा है। जो मारे हुए जानवर का मांस खाता है, वह असल में अपना मुर्दा आप ही खा रहा है। जानवरों की मौत उसकी अपनी मौत है क्योंकि इस गुनाह का बदला मौत से कम हो ही नहीं सकता। बेजुबान की हत्या न करो और ना ही अपने निरीह शिकार का मांस खाओ, इससे कहीं तुम शैतान के गुलाम न बन जाओ''। वे आगे फरमाते हैं कि यदि तुम शाकाहारी भोजन को अपना आहार बनाओगे तो तुम्हें जीवन की शक्ति मिलेगी। लेकिन यदि तुम मृत (मांसाहार) भोजन करोगे तो वह मृत आहार तुम्हें भी मार देगा। क्योंकि केवल जीवन से ही जीवन मिलता है मौत से हमेशा मौत ही मिलती है।

सिक्ख धर्म - गुरु अर्जुन देव जी ने परमात्मा से सच्चा प्रेम करने वालों की समानता हंस से की है और दूसरों को बगुला बताया है। आपने बताया कि हंसों की खुराक मोती है और बगुला की मछली व मेंढक। गुरुसाहब ने स्पष्ट रूप से हिंसा न करने का आदेश दिया है और जब हिंसा ही मना है तो मांस-मछली खाने का सवाल ही नहीं उठता। शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने शहरी खोज के बाद जो गुरुसाहब के निशान तथा हुक्मनामे पुस्तक के रूप में छपवाये हैं उनमें मांस, मछली, प्याज, नशीले पदार्थ, शराब आदि की मनाही की गई है। सभी सिख गुरुद्वारों में अनिवार्यतः शाकाहारी लंगर ही बनता है।

जैन धर्म - अहिंसा जैन धर्म का सबसे प्रमुख सिद्धांत है। जैन धर्म में हिंसा के नौ भेद किये गये हैं। भाव हिंसा, द्रव्य हिंसा, स्वयं हिंसा करना, दूसरों के द्वारा करवाना और सहमति प्रकट करना सब वर्जित है। हिंसा के विषय में सोचना तक पाप माना है। हिंसा जो मन, वचन, और कर्म के द्वारा कृत कारित और अनुमोदना से की जाती है वह द्रव्य और भाव हिंसा कहलाती है। अतः किसी को भी ऐसे शब्द कहना जो उसको पीड़ित करे वह भी हिंसा मानी गयी है। ऐसे धर्म में जहाँ जानवरों को बाँधना, दुःख पहुँचाना, मारना व उन पर अधिक भार लादना तक पाप माना जाता है वहाँ मांसाहार का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

बौद्ध धर्म - बौद्ध धर्म के पंचशील अर्थात् सदाचार के पांच नियमों में प्रथम व प्रमुख नियम किसी प्राणी को दुःख नहीं देना अहिंसा ही है। पाँचवा नियम शराब आदि नशीले पदार्थों से परहेज करना है।

शाकाहार सर्वोत्तम आहार पम्फलेट से साभार

प्रकाशक : श्री ज्ञान वर्षायाग समिति-2005, दिल्ली-31

पुस्तक THE TAO OF JAINA SCIENCES पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत की गई सम्मतियां

1. विद्वत्प्रवर श्री नीरज जी जैन सतना ने अपने पत्र दिनांक 18.01.2010 में ताओ ऑफ जैना सांइसेज (THE TAO OF JAINA SCIENCES) की संशोधित प्रति 2009 के लेखक प्रो. एल.सी. जैन के विषय में सादर धन्यवाद प्रेषित कर लेख किया है कि- ''जैन सिद्धान्त के अंतर्गत कर्म-विज्ञान में गहरी रुचि होने के बावजूद भी 'जैन गणित' के आधार पर उसमें मेरा प्रवेश नहीं है। इस पर भी जब-जब मुझे आपके साथ वार्तालाप का सौभाग्य मिला है तब मैंने अनुभव किया है कि आप अपनी सरल विवेचना-पद्धति के माध्यम से इस अति-गहन विषय को, मुझ जैसे अल्पज्ञानी के लिये भी, बुद्धिगम्य बनाकर प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसे हर अवसर पर मुझे आपके साथ बैठकर गौरव की अनुभूति हुई है।

मैं यह भी जानता हूँ कि श्रुतसेवा के इस क्षेत्र में सेवाओं का सही मूल्यांकन नहीं हुआ। मैं इसमें किसी का दोष नहीं देखता। ईर्ष्या और अहमन्यता के कोहरे में फँसे व्यक्तियों को पर के अवदान का भास नहीं होने पाता। आपने स्वयं वंचित होते रहना स्वीकार करके इस बाधा को कभी अपनी गतिशीलता के आड़े नहीं आने दिया और स्व-स्फूर्त्त प्रेरणा के बल पर स्वयं आगे बढ़ते रहे तथा बढ़ रहे हैं, यह आपकी संकल्प-शक्ति का द्योतक है। संकल्पों की इस दृढ़ता ने ही सात समंदर पार कर आपकी कीर्ति फैलाई है, इससे बड़ा सम्मान किसी चिन्तक या विचारक को और क्या मिल सकता है? आपके इसी गुण के लिये मैं सदा आपका प्रशंसक रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप जैसे किसी धुन के पक्के धुनिया को ही बैंजामिन फ्रेंकलिन ने लिखा होगा-

- You can not expect immediate greatful acknowledgement of your public services. You may have to go through abuses and even injuries. But time will do justice in the minds of those prejudiced against you.

The internal satisfection of a good conscience is always present.

- Benzamin Franklin

आप ऐसे ही संकल्पित होकर लगे रहें और सफलताओं की नित नई सीमाओं को छूते रहें, स्वस्थ्य रहें और दीर्घायु हों, क्योंकि श्रुत-सेवा का ऐसा काम जिसे आप जैसे कुछ मनीषी ही कर सकते हैं, अभी करने को बहुत पड़ा है। इसी भावना के साथ पुनः अभिवादन''। -**नीरज जैन, सतना**

2. The Kenneth O. May Medal (established by International Council of History, Philosophy, Science & Mathematics) Awardee and UNESCO Representative in India, Prof. Dr. R.C. Gupta, rewrites about the revised edition 2009 of the Tao of Jaina Sciences (writer Dr. Prof. L.C. Jain) that "It is an excellent treatise collecting six monographs. The detailed exposition of the Jaina Sciences with Historical, Philosophical, and Mathematical perspectives will greatly help scholars of Indology as well as of History of Science in general. In fact his work in the field is deep and

voluminous and can not be surpassed in near future. I hope that more and more scholars will reap the benefits of his work." (vide his letter dated 25.01.2010)

3. Mr. Ashish Shah, of Credit Cards, Kotak Mahindra Bank Limited, Mumbai writes about the revised edition 2009 of "The Tao of Jaina Sciences" that His works in these fields are undoubtedly phenomenal and a must read for the new generation of Jains." (vide his e-mail dated 18-12-2009)

प्रो. एल.सी. जैन द्वारा विगत वर्षों में किए गए जैन कर्म सिद्धान्त के गणितीय कार्यों की विस्तृत जानकारी हेतु बेबसाइट www.mathematical-karma-arena.com पर लॉगआन करें।

वर्द्धमान-महावीर का वर्तमान

समय - 2600 वर्ष पूर्व / भ. पार्श्वनाथ से 250 वर्ष बाद

जन्म स्थान	:	कुण्डनगर (वैशाली) वर्तमान बिहार प्रान्त
माता	:	त्रिशला (प्रियकारिणी)
पिता	:	राजा सिद्धार्थ
वंश	:	ज्ञातृवंश (नाथवंश)
कुल	:	क्षत्रिय
नाना	:	महाराजा चेटक
नाम	:	1. वर्द्धमान, 2. सन्मति, 3. वीर, 4. महावीर, 5. अतिवीर
ऊँचाई	:	7 हाथ
आयु	:	72 वर्ष
रंग	:	तप्त स्वर्ण सम
गृहस्थ अवस्था	:	30 वर्ष तक गृहस्थाश्रम में बाल ब्रह्मचारी रहकर बिताया
तप	:	नग्न दिगम्बर दीक्षा धारण कर 12 वर्ष तक कठोर तप किया
प्रबुद्ध अवस्था	:	30 वर्ष तक, केवल ज्ञान के बाद सर्वोदयी सभा-समवशरण में उपदेश दिया
गर्भ कल्याणक	:	आषाढ़ शुक्ल 6
जन्म कल्याणक	:	चैत्र शुक्ल 13
तप कल्याणक	:	मगसिर कृष्ण 10 ज्ञातखण्ड वन में दीक्षा
केवल ज्ञान कल्याणक	:	वैशाख शुक्ल 10
केवल ज्ञान स्थल	:	ऋजुकूला नदी के किनारे, शाल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ
प्रथम उपदेश	:	विपुलाचल पर्वत पर श्रावण वदी 1 को
निर्वाण	:	कार्तिक कृष्ण अमावस्या के प्रातः काल पावापुरी में कायोत्सर्ग आसन से मुक्ति
चिह्न	:	सिंह

सम्यक् ध्यान शतक

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

ध्यान हेतु द्रव्य

जीव द्रव्य आधार है, ध्याता, साध्य स्वजीव।
संहनन आदि अजीव हैं, हेतु देव, गुरु जीव।।

संहनन

वज्रवृषभनाराच यह, संहनन श्रेष्ठ सुजान।
शुभ ध्यानी बन कर्म क्षय, होवे मोक्ष महान।।

आसन

खड्गासनरु पद्मासन, सिद्धासन का योग।
वीरासनरु वज्रासन, ध्यानी बने अयोग।।

आहार

अशन राजसिक, तामसिक, जिसे छोड़ना श्रेष्ठ।
सात्विक, प्रासुक हो अशन, ध्यान बढ़े, वय जेष्ठ।।

*

नशा, आमिस, कंद तज, निशि में छोड़े भोज।
मर्यादित, शोधित अशन, स्वस्थ ध्यान हो रोज।।

*

एक बार भोजन करे, योगी वह कहलाय।
दोय बार भोगी करे, त्रय रोगी हो जाय।।

*

अर्द्ध उदर भोजन करे, दुगुना जल, हो ध्यान।
तिगुना परिश्रम जो करे, शतायु हो धीमान।।

*

खोवा, मेवा आदि हैं, जहाँ पदार्थ गरिष्ठ।
जो पदार्थ रुचिकर लगें, कहलाते हैं इष्ट।।

बाधक तत्त्व

इष्ट गरिष्ठ पदार्थ वा, स्त्री का संसर्ग।
व्यसन सभी सद्ध्यान में, बाधा दें उपसर्ग।।

क्रमशः ....

जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा

डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह

काल द्रव्य प्रत्येक पदार्थ में होने वाले परिवर्तन/परिणमन का हेतु है, यही वह द्रव्य हैं जिसके निमित्त से अन्य द्रव्य अपनी पुरानी अवस्था को छोड़कर प्रति क्षण नया रूप धारण करते हैं। यह भी आकाश की तरह अमूर्त और निष्क्रिय है किन्तु उसकी तरह एक ओर व्यापक ना होकर असंख्य हैं जो पूरे लोकाकाश के प्रदेशों पर रत्नों की राशि की तरह भरे पड़े हैं। लोकाकाश में जितने प्रदेश हैं उतने ही कालाणु हैं। वर्तना इसका मुख्य लक्षण है। पदार्थों में परिणमन यह बलात् नहीं कराता बल्कि इस की उपस्थिति में पदार्थ स्वयं अपना परिणमन करते हैं। यह तो कुम्हार के चाक के नीचे रहने वाली कील की तरह है जो स्वयं नहीं चलती, ना ही चाक को संचालित करती है, फिर भी कील के अभाव में चाक घूम नहीं सकता। चाक के परिभ्रमण के लिए कील का आलम्बन अनिवार्य है। काल द्रव्य की यही भूमिका है, परिणमनगत इस आलम्बन को वर्तना कहते हैं, यह काल द्रव्य का मुख्य लक्षण है इसे ही निश्चय काल कहते हैं, इसके अभाव में पदार्थों का परिणमन नहीं हो सकता अर्थात् जो स्वयं पलटता है, तथा स्वयं पलटते हुए अन्य द्रव्यों के पलटने में कुम्हार के चाक की कील के समान सहायक होता है।

समय, पल, घड़ी, घण्टा, मिनिट आदि व्यवहार काल है। समय काल की सूक्ष्मतम इकाई है। एक पुद्गल परमाणु को मंद गति से आकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जाने में जो काल लगता है, उसे समय कहते हैं। नया-पुराना, बड़ा-छोटा, दूर-निकट, आदि का व्यवहार इस व्यवहार काल द्रव्य के ही आश्रित है, इसका अनुमान सौरमंडल एवं घड़ी आदि के माध्यम से लगाया जाता है। द्रव्यों के होने वाले परिणमन से भूत, भविष्य और वर्तमान का व्यवहार भी इसी काल के आश्रित है।

काल समयादि की उत्पत्ति के निमित्त - ज्योतिष देव मनुष्य लोक में मेरू की प्रदक्षिणा करने वाले और निरंतर गतिशील हैं, उन गमन करने वाले ज्योतिषियों के द्वारा किया हुआ काल विभाग है।

किसी प्रदेश मात्र काल पदार्थ के द्वारा आकाश का जो प्रदेश व्याप्त हो, उस प्रदेश को जब परमाणु मंद गति से उल्लंघन करता है, तब उस प्रदेश मात्र अतिक्रमण के परिणाम के बराबर जो काल पदार्थ की सूक्ष्मवृत्ति रूप समय है, वह उस काल पदार्थ की पर्याय है।

परमाणु के गमन के आश्रित समय है, आंख मिचने के आश्रित निमेश है, उसकी (निमेश की) अमुख संख्या से काश्ठा, कला और घड़ी होती है, सूर्य के गमन के आश्रित अहोरात्र होता है, और उसकी (अहोरात्र की) अमुख संख्या से मास, ऋतु, अयन और वर्ष होते हैं।

मनुष्य क्षेत्र में व्यवहार काल का व्यवहार - सूर्यगति निमित्तक व्यवहार काल मनुष्य क्षेत्र में ही चलता है, क्योंकि मनुष्य लोक में ज्योतिर्देव गतिशील होते हैं, बाहर के ज्योतिर्देव अवस्थित हैं।

त्रिकाल गोचर अनन्त पर्यायों से परिपूरित केवलज्ञान में एक मात्र मनुष्य क्षेत्र संबंधी ज्योतिर्मंडल व्यवहारकाल का आधार है।

देवलोक आदि में इसका व्यवहार मनुष्य क्षेत्र की अपेक्षा किया जाता है- मनुष्य क्षेत्र से उत्पन्न आवलिका आदि से तीनों लोकों के प्राणियों की कर्म स्थिति, भव स्थिति और काय स्थिति आदि का परिच्छेद होता है इसी से संख्येय, असंख्येय और अनंत आदि की गिनती की जाती है।

काल द्रव्य को जानने का प्रयोजन - उपरोक्त लक्षण वाले काल को जानने पर भी इस जीवन ने परमात्म तत्व की प्राप्ति के बिना संसार सागर में अनंत काल तक भ्रमण किया है, इसलिए निज परमात्म तत्त्व सर्व प्रकार उपादेय रूप से श्रद्धेय है, जानने योग्य है, तथा ध्यान करने योग्य है यह तात्पर्य है।

यद्यपि यह जीव काललब्धि के वश से अनन्त सुख का भाजन होता है, तथापि- निज परमात्म तत्त्व का सम्यक् श्रद्धान, ज्ञान, आचरण और तपश्चरण रूप से चार प्रकार की निश्चय आराधना है, वह आराधना ही उस जीव के अनन्त सुख की प्राप्ति में उपादान कारण जाननी चाहिए उसमें काल उपादान कारण नहीं है, इसलिए काल उसमें एक निमित्त मात्र है।

कालनिमित्त - प्रत्येक कार्य अपने योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप स्वचतुष्टय के द्वारा निष्पादित होता है बिना योग्य सामग्री या कारणों की समष्टि के, योग्यता रखता हुआ कोई भी पदार्थ कार्य करने में असमर्थ है जैसे वृक्ष बनने हेतु बीज को निम्न चतुष्ट की आवश्यकता हैं-

1. **बीज का स्वरूप रूप द्रव्य**
2. **उसके योग्य उर्वरा मिट्टी युक्त क्षेत्र, आर्द्रता**
3. **योग्य काल, मौसम, जैसे आम के लिए जून-जुलाई का समय।**
4. **बीज के वृक्षत्व रूप परिणमन की शक्ति आदि।**

उसी प्रकार आत्मा को मुक्ति प्राप्त करने हेतु द्रव्य - क्षेत्र - काल - भाव - रूप उपयुक्त चतुष्टय की आवश्यकता हैं इसके कुछ कारण या सामग्री अंतरंग रूप होती है।

साक्षात् काल - मुक्ति योग्य साक्षात् काल अथवा प्रत्युत्पन्न नयापेक्षा चौदहवें अयोगकेवली गुणस्थान का चरम समय है। न्याय शास्त्रों के मत में पूर्व पर्याय जो कि एक समयवर्ती है, नवीन पर्याय को

जन्म देती है, यह उल्लेख है। इससे स्पष्ट हैं, कि मुक्ति रूप पर्याय का उपादान कारण संसार की अंतिम समयवर्ती पर्याय (उपर्युक्त अयोग केवली की चरम समय रूप) है निश्चय नय से वही काल मुक्ति योग्य है। दृष्टव्य है–कालेन कस्मिन काले सिद्धिः? प्रत्युत्पन्न नयापेक्षया एक समये सिद्धो भवती।

परम्परा काल – यहां मुक्ति योग्य पारम्परिक काल का विचार करते हैं। भूतप्रज्ञापन नय की अपेक्षा से जन्म की दृष्टि से सामान्य रूप से भरत, ऐरावत क्षेत्र में उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी काल मुक्ति योग्य हैं। विशेष रूप से अवसर्पिणी के सुषमा–दुषमा के अत्यंत भाग में और दुषमा – सुषमा में उत्पन्न हुआ सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त काल में नहीं। संहरण की अपेक्षा सब काल तथा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में मुक्ति प्राप्त होती है।

सुषमा – दुषमा नामक तीसरे काल में भगवान ऋषभ देव जन्म लेकर मोक्ष गये। काल की यह योग्यता हुंडावसर्पिणी की विशेषता के कारण हुई। भगवान महावीर ने तो सुयोग्य चतुर्थकाल में ही मुक्ति प्राप्त की।

विदेह क्षेत्र की दृष्टि से वहां सदैव मुक्ति योग्य काल है। भरत, ऐरावत के माध्यम चतुर्थ काल के समान वहां मुक्ति प्राप्ति रूप काल की योग्यता है।

मुक्ति प्राप्त करने में योग्यता के विकास में काल द्रव्य की सहायता भी आवश्यक है। मोक्ष रूप परिणमन भी तो जीव का ही है। उसमें ''वर्तना परिणाम क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य'' – इस सूत्र के अनुसार काल निमित्त है उपादान में योग्यता होने पर भी निमित्त या बाह्य कारणों के बिना मुक्ति ही क्या, किसी भी द्रव्य का परिणमन, क्रिया संभव नहीं है। आचार्य वीरसेन भरत क्षेत्र विषयक मुक्ति काल की योग्यता की प्ररूपणा करते हुए कहते हैं कि एकेन्द्रिय पर्याय से आकर इस अवसर्पिणी के तीसरे काल में उत्पन्न हुए सर्द्धनकुमार आदि के मोह की क्षपणा देखी जाती है। ज्ञातव्य है कि मोह का क्षपण भी मुक्ति के मार्ग में एक मुख्य घटक है।

मुक्ति की प्राप्ति रात्रि या दिन के किसी भी अवसर पर हो सकती है यहां केवली समुद्घात द्वारा जो जीव मुक्ति प्राप्त करते हैं, इस विषय में गवेषणा करते हैं।

आयु के छः माह शेष रहने पर जिन्हें केवलज्ञान उत्पन्न होता है, वे केवली समुद्घात में सिद्ध होते हैं समुद्घात के विषय में शेष भजनीय है। यह भी दृष्टव्य है, कि मोक्ष प्राप्ति का कोई काल नियम नहीं है जब जीव तपश्चरण आदि के अकाल में ही कर्मों की अविपाक निर्जरा करता है, तब मोक्ष मिलता है। काल के आधीन एवं निश्चित या क्रमबद्धता के आधार पर मोक्ष होगा यह मान्यता आगम के विरुद्ध है। यह विचार पुरुषार्थहीनता का द्योतक है, कि बिना किसी उपाय के स्वकाल में अपने आप होनहार से मोक्ष मिल जायेगा।

कालचक्र – संपूर्ण तीन लोक में केवल मध्य लोक संबंधी ढाई द्वीप, जो कि मनुष्य लोक से कथित है, उसके केवल भरत, ऐरावत क्षेत्र संबंधी में ही काल परिवर्तन होता है, अन्यत्र षट्काल रूपी परिवर्तन नहीं होता है।

''भरतैरावतयोर्वृद्धि–ह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवर्पिणीभ्याम्'' ।। त.सू.अ.3/सू.27

भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी के छः कालों की अपेक्षा वृद्धि और ह्रास होता रहता है। यहाँ वृद्धि और ह्रास, क्षेत्रों की वृद्धि और ह्रास नहीं है, क्योंकि ऐसा होना असम्भव है, किन्तु उन क्षेत्रों में रहने वाले मनुष्यों की आयु, शरीर, ज्ञान, शक्ति आदि की अपेक्षा वृद्धि और ह्रास होता है, जिसमें अनुभव और ज्ञानादि की वृद्धि होती है, वह उत्सर्पिणी और जिसमें इनका ह्रास होता है वह अवसर्पिणी काल है, अवसर्पिणी के छः भेद है – सुषमा–सुषमा, सुषमा, सुषमा–दुषमा, दुषमा–सुषमा, दुषमा, दुषमा–दुषमा। प्रथम काल चार कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण है। द्वितीय काल तीन कोड़ाकोडी सागर, तृतीय काल दो कोड़ाकोड़ी सागर, चर्तुथकाल ब्यालीस हजार वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागर, पंचमकाल इक्कीस हजार वर्ष का एवं छटाकाल इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण है।

क्रमशः ....

प्रलयकाल की आशंका

– प्रवचन बिन्दु : मुनि आर्जवसागर

उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी के षट्काल सम्बन्धी दश–दश कोड़ाकोड़ी सागरोपम वर्ष बीतने के उपरान्त मात्र भरत–ऐरावत क्षेत्रों में प्रलय होता है प्रलय के साथ होने वाली उनन्चास तरह की वर्षाओं के उपरान्त पुनः जीवों की उत्पत्ति होती है अर्थात प्रलय पूर्व देव गति के देवों द्वारा विजयार्ध की गुफाओं में जीवों के बहत्तर जोड़ों को छुपा दिया जाता है और प्रलय सम्बन्धित 49 वर्षाओं के पूर्ण होते ही जब धरती अमृतमय हो जाती है तब उन जीवों को गुफाओं से बाहर आने पर अन्य जीवों की उत्पत्ति संभव होती है। यह क्रम 10 कोड़ा–कोड़ी सागरोपम वर्ष तक चलता रहता है बीच में कोई प्रलय नहीं होता। अभी पञ्चम काल जो 21 हजार वर्ष की मर्यादा है चल रहा है। इस पञ्चम काल के लगभग ढाई हजार वर्ष व्यतीत हुये हैं तदुपरान्त इक्कीस हजार वर्ष का छटवाँ काल आवेगा तदुपरान्त प्रलय अवश्यंभावी है। परन्तु कुछ अनुमानवेत्ताओं ने सन् 2012 में प्रलय आने की धमकी दी है या आशंका व्यक्त की है वह सर्वथा जैन सिद्धान्तानुसार गलत है। साढ़े उन्तालीस हजार वर्ष तक प्रलय की किञ्चित भी संभावना करना व्यर्थ है। पञ्चम काल में ऋषि मुनि और धर्म की शरण स्वयं प्रलय की आशंका दूर करने में पूर्ण समर्थ है ही। समय पूर्व भयभीत होना सद्धर्म की शरण से दूरस्थता का प्रतीक है।

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

आहार बलवर्धक, स्वस्थ, मन व तन का कारक होना चाहिए। सभी शरीर विज्ञानियों का कथन है कि स्वस्थ वह है जिसकी धातु समान है, वात-पित्त-कफ समान है। जठराग्नि ठीक काम कर रही है। मल क्रिया भी ठीक है तथा जिसकी आत्मा शान्त है, जिसकी इन्द्रियाँ शान्त हैं व जिसका मन शान्त है। इन सब की पूर्ति किस भोजन से हो सकती है? आज वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य जैसा भोजन खाता है वैसा उसका मन होता है और वैसा ही उसका स्वभाव होता है।

अभक्ष्य (नहीं खाने योग्य) भोजन ग्रहण करने पर शरीर रोगी हो जाता है। मन में अशान्ति, पांचों इन्द्रियों की लोलुपता को बढ़ाने की मानसिकता तथा पापों की वृद्धि करने में सहायक होता है। इस भोजन के सेवन से द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव चारों अशुद्ध हो जाते हैं।

अभक्ष्य या विषजन्य (toxic) द्रव्य एवं पदार्थों के मुख्य लक्षण निम्नानुसार हैं :-

1. दो इंद्रिय आदि जीवों का घात होने से जैसे मांसादि, मक्खन-नवनीत आदि, पुष्पों, फूल, अमर्यादित खाद्य सामग्री (निर्धारित समय से अधिक रखने पर खराब होने वाली) एवं अनछने जल से त्रसजीवों का घात होता है। यह अभक्ष्य (नहीं खाने योग्य) सामग्री है।
2. कन्दमूल, आलू, अदरक, गाजर, मूली आदि जमीकन्द में अनन्त संख्या में साधारण स्थावर जीवों के रहने से अभक्ष्य है।
3. नशीले पदार्थ जैसे तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गुटका, मद्य आदि का सेवन अभक्ष्य है।
4. अनुपस्थ गोमूत्र, जूठा भोजन, शहद आदि का सेवन अभक्ष्य है।
5. व्यक्ति विशेष के स्वास्थ्य के प्रतिकूल सामग्री को भी अभक्ष्य माना जाता है, जबकि वही सामग्री अन्य व्यक्ति के स्वास्थ्य व अनुकूल होने पर उसके खाने योग्य हो सकती है।
6. लौकिक अशुचिता एवं अपवित्रता, कामसेवन, अन्त्येष्टि, कटिंग व शेविंग, रजस्वला (एम.सी.) स्त्री का स्पर्श, नाक-कान-मुख का मैल, खून, हाड़-मांस, कुत्ता आदि जानवर का स्पर्श, मैले वस्त्र, सूतक एवं पातक के स्पर्श से सामग्री अभक्ष्य हो जाती है।

7. रात्रि में तैयार एवं शोधन की गयी सामग्री अभक्ष्य हो जाती है।

8. नौकरों के द्वारा अशुद्धि पूर्वक तैयार की गई खाद्य सामग्री अभक्ष्य होती है।

9. बहुत महँगी अथवा जिसके क्रय करने की शक्ति नहीं हो तो वह सामग्री अभक्ष्य मानी जाती है।

स्वच्छ जल मिलने का सबसे अच्छा साधन कुआ है क्योंकि नलों (म्यूनिसपल-नल, टयूबवेल व हेन्डपंप) से कई बार दूषित जल, जीव-जन्तु (मरे एवं जिन्दा) का पाया जाना, गहरे ट्यूबवेल में भारी धातु/लवण युक्त जल समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है। गहरे ट्यूबवेल में भारी धातु/लवण युक्त जल को पीने से पाचन, किडनी आदि से संबंधित रोगों की संभावना होती है। कुआ से जल निकालने तथा जल छानकर जीवानी उसी कुए में डालने से अहिंसा धर्म का पालन होता है एवं जीवों की रक्षा हो जाती है। सभी को यह वैज्ञानिक तथ्य ज्ञात है कि विभिन्न जल स्रोतों के जैविक एवं रसायनिक गुण भिन्न-भिन्न होते हैं जिससे एक कुए या जल स्रोत में पाए जाने वाले जीवों के जीवन हेतु अनुकूल होता है तथा अन्य कुए या जल स्रोत का जल इन्हीं जीवों के जीवन के लिये प्रतिकूल होता है अर्थात् जीवन समाप्ति का कारण बन जाता है।

छने जल को कुए से प्राप्त करने के उपरान्त उबालना आवश्यक है अन्यथा उसमें पुनः 48 मिनट में सूक्ष्म जीव उत्पन्न होने लगते हैं। छने जल को हल्का कुनकुना करने पर मर्यादा कम हो जाने से अल्प समय में ही सूक्ष्म जीवराशि उत्पन्न होने लगती है। अतः जल को उबालकर प्रासुक होने पर ही उपयोग करना चाहिए जिससे शुद्ध जल द्वारा तैयार भोजन सामग्री शुद्ध रहे एवं पीने का जल भी स्वास्थ्य दायक बना रहे।

भोजन बनाते समय हाथ तथा वस्त्रों का स्वच्छ होना आवश्यक है अन्यथा खाद्य सामग्री तो शुद्ध है किन्तु अस्वच्छ हाथ एवं वस्त्रों के कारण भोजन अशुद्ध हो जावेगा। चौका में भी स्वच्छता रखनी आवश्यक है क्योंकि हवा में उपस्थित धूल भोजन को अशुद्ध तथा प्रदूषित कर देती है। चौके में हाथ-पैर धोकर स्वच्छ वस्त्रों में प्रवेश करना आवश्यक है जिससे गंदगी का प्रवेश ना हो। होटल/सामूहिक भोज में लोग जूते एवं चप्पल तथा दूषित वस्त्र पहनकर भोजन कर रोगी बनने के अवसर प्राप्त कर लेते हैं। भोजन बनाने से पूर्व सामग्री का पूर्ण रूप से शोधन तथा पानी से धोकर साफ करना भी अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा अशुद्ध सामग्री से कीटाणुओं की उत्पत्ति होने से अथवा शुद्ध सामग्री से अशुद्ध वातावरण में तैयार अशुद्ध भोजन ही प्राप्त होगा।

स्वच्छ सामग्री में स्थान, वस्त्रों तथा बर्तनों की स्वच्छता भी शामिल है। भोजन बनाने में

उचित समय का बड़ा महत्व है क्योंकि सूर्योदय तथा सूर्यास्त के मध्य ही, अर्थात् दिन में ही सामग्री का शोधन एवं साफ कर तैयार किया जा सकता है। दिन का प्रकाश रात्रि में किसी भी साधन से नहीं प्राप्त नहीं हो सकता है। दिन में प्रकाश की उपस्थिति से अल्ट्रा वायलेट एवं इन्फ्रा रेड आदि अन्य किरणों से वातावरण में जीवों, कीड़े-मकोड़े तथा कीटाणुओं की उपस्थिति लगभग नगण्य हो जाती है। अंधेरे या रात में सामग्री का शोधन एवं सफाई नहीं होने से जीवराशि की बहुलता खाद्य सामग्री में मिल जाती है, तथा उस भोजन को विषाक्त बना देती है। भोजन उपयोग करने लायक नहीं रहता है। सभी सामग्री तैयार करते समय तथा उपयोग में लाने तक हमेशा ढाँक कर रखना चाहिए अन्यथा सामग्री में वातावरण का प्रदूषण, बाल, कचरा एवं जीव गिरने की सम्भावना रहती है। कीटाणुओं से उत्पन्न विष से कई रोगों की उत्पत्ति से इंकार नहीं किया जा सकता है।

खेती से प्राप्त अन्न व वृक्षों से प्राप्त जीवरहित फल जैसे-गेहूँ, चांवल, ज्वार, मक्का, बाजरा, सभी दालें, आम, केला, पपीता, सेवफल तथा छना पानी, अनेक बीमारियों में नित्य खाये जाने वाले मौसम के फल, सब्जियाँ, मसाले, दादी माँ के नुस्खे आदि के प्रयोग से स्वास्थ्य लाभ, रोगों की चिकित्सा एवं बीमारी में रोगी के लिए उचित भोजन, हर प्रकार की चिकित्सा में सहायक हैं।

क्रमशः........

आधा पेट भोजन, दुगना पानी पीव । तिगुना श्रम चौगनी हंसी, वर्ष सवा सौ जीव ।।

जो एक बार खाये, उसका नाम योगी । जो दो बार खाये, उसका नाम भोगी ।।
जो तीन बार खाये, उसका नाम रोगी । जो चार बार खाये, उसकी क्या दशा होगी ।।

पैर गरम, पेट नरम, सिर हो ठण्डा । वैद्य जी आयें दिखाओ उनको दण्डा ।।

विटामिन्स के शाकाहारी स्त्रोत :

1. विटामिन ए : हरी सब्जियां, गाजर, टमाटर, मूली के पत्ते आदि।
2. विटामिन बी : हरी पत्तेदार सब्जियाँ व अनाज।
3. विटामिन सी : हरी सब्जियाँ, नींबू, अमरूद, आंवला, संतरा, मौसमी आदि।
4. विटामिन डी : सूर्य की किरणें
5. विटामिन ई : मक्खन, घी आदि
6. विटामिन के : हरी सब्जियां

दूध, दाल, तरबूज, खरबूज, सूखे मेवे, आदि के सेवन से भी विटामिन्स/मिनरल्स प्राप्त किये जा सकते है।

जैन धर्म में कर्म व्यवस्था

(मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के प्रवचन पर आधारित)

गतांक से आगे ....

नामकर्म - संसार पर्याय में जीव के नाना प्रकार के शरीर बनाने में जो निमित्त होता है या जिस कर्म के उदय से जीव के शरीर की रचना होती है, उसे नामकर्म कहते हैं। नामकर्म के शुभ और अशुभ मुख्य दो भेद हैं। शुभ नामकर्म के प्रभाव से मनोज्ञ और सातिशय अनुपम शरीर की प्राप्ति होती है। अशुभ नामकर्म के कारण कुरूप शरीर की प्राप्ति होती है। शुभ नामकर्म पुण्य रूप तथा अशुभ नामकर्म पाप रूप है। नाम कर्म के मुख्य ब्यालीस भेद तथा उपभेद सहित कुल तिरानवे (९३) भेद हो जाते हैं। नामकर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम और न्यूनतम आठ मुहूर्त है। नामकर्म के आस्रव व बन्ध के प्रमुख कारण इस प्रकार जानना चाहिए-

अ. अशुभ नामकर्म सम्बन्धी कारण -

१. मन, वचन, काय की वक्रता (कुटिलता, विपरीतता) का होना।
२. सम्यग्दर्शनादिक रूप मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति करने वाले को उस प्रकार की प्रवृत्ति करने से रोकना।
३. चुगली करना।
४. मिथ्यात्व का सेवन करना।
५. पर निन्दा में रुचि का होना।
६. मन की चंचलता का होना।
७. किसी के अंगों को नष्ट करना।
८. नाप-तौल के बांट घट-बढ़ रखना।
९. अशोभनीय या भय कारक रूपों की रचना इत्यादि।

ब. शुभ नामकर्म सम्बन्धी कारण -

१. मन, वचन, काय की सरलता का होना।
२. मोक्षमार्ग में रुचि करना।
३. सम्यग्दर्शन का धारण करना।
४. पर निन्दा में अरुचि होना।
५. चुगली करने का त्याग करना।
६. मन की स्थिरता का होना।

७. सद्‌भावना रखना।
८. संसार के कारण स्वरूप प्रपंच से डरना।
९. प्रमाद छोड़ना।
१०. विवाद छोड़ना इत्यादि।

स. शुभ नामकर्म के अन्तर्गत तीर्थंकर प्रकृति सम्बन्धी कारण -

१. सम्यग्दर्शन की विशुद्धता रखना।
२. विनय सम्पन्नता होना।
३. शील व व्रतों का निरतिचार पालन करना।
४. निरन्तर ज्ञान लवलीनता होना।
५. निरन्तर संवेग (पाप से भय) होना।
६. शक्ति के अनुसार त्याग करना।
७. शक्ति के अनुसार तप करना।
८. साधु समाधि (विघ्न शमन) करना।
९. वैयावृत्ति (साधु सेवा) करना।
१०. अरिहन्त भक्ति करना।
११. आचार्य भक्ति करना।
१२. बहुश्रुत भक्ति करना।
१३. प्रवचन (शास्त्र) भक्ति करना।
१४. आवश्यक नित्य अर्थात् धार्मिक क्रियाओं का सदा पालन करना।
१५. धर्म-मार्ग की प्रभावना करना।
१६. धर्मीजनों के प्रति वात्सल्य भाव करना।

गोत्र कर्म - जिस कर्म के निमित्त से जीव उच्च-नीच कहलाने वाले गोत्र में उत्पन्न होता है वह गोत्र कर्म कहलाता है। वह उच्च-नीच के भेद से दो प्रकार का है। जिस कर्म के उदय से जीव कुलीन और लोकमान्य परिवार में उत्पन्न होता है वह उच्च गोत्र कहलाता है और जिस कर्म के निमित्त से जीव अकुलीन निंद्य परिवार में उत्पन्न होता है उसे नीच गोत्र कहते हैं। गोत्र कर्म द्वारा वंशसम्बन्धी अच्छे या बुरे प्रभाव को आधुनिक प्राणीशास्त्र भी स्वीकार करता है। गोत्र कर्म के दो भेद हैं। उच्च गोत्र कर्म और नीच गोत्र कर्म। गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम है एवं न्यूनतम स्थिति आठमुहूर्त है। गोत्र कर्म के आस्रव व बन्ध के कारण भी समझने योग्य हैं -

अ. नीच गोत्र कर्म सम्बन्धी कारण –

१. पर के सच्चे या झूठे दोषों को प्रकट करना अर्थात् निन्दा करना।
२. अपने गुणों को प्रकट करना अर्थात् अपनी प्रशंसा करना।
३. दूसरों के सद्‌गुणों को ढकना।
४. दूसरों के असद् (बुरे) गुणों को प्रकाशित करना।
५. किसी सद्धर्मी को समाज या समूह के बीच नीचा दिखाने का भाव रखना।

ब. उच्च गोत्र कर्म सम्बन्धी कारण –

१. आप ही श्रेष्ठ हैं इत्यादिक वचनों से पर प्रशंसा करना।
२. मैं कुछ भी नहीं (गुणों के क्षेत्र में) इत्यादिक वचनों से आत्म-निन्दा करना।
३. दूसरों के सद्‌गुणों को प्रकट करना।
४. दूसरों के असद्‌गुणों को ढांकना।
५. जो अपने से धार्मिक गुणों में बड़े हैं, उनके प्रति विनययुक्त नम्र रहना (उठ करके खड़े होना, हाथ जोड़ना) इत्यादि।
६. ज्ञान का मद नहीं करना अर्थात् अहंकार का अभाव होना।
७. धर्मीजनों को समाज के बीच ऊपर उठाने का भाव होना इत्यादि।

अन्तराय कर्म – जो कर्म विघ्न डालता है, उसे अन्तराय कर्म कहते हैं। जीव बहुत कुछ सोचता है, बड़े-बड़े कार्य करने की बड़ी योजना भी बनाता है, अनुकूल साधन भी हैं फिर भी वह अपनी मनोभावना को पूर्ण नहीं कर पाता क्योंकि अन्तराय कर्म दान, लाभ आदि में विघ्न उपस्थित कर देता है। अन्तराय कर्म के पाँच भेद हैं-दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, और वीर्यान्तराय। अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम और न्यूनतम स्थिति अन्तर्मुहूर्त है। अन्तराय कर्म के आस्रव व बन्ध के प्रमुख कारणों का परिहार भी आवश्यक है –

अन्तराय कर्म सम्बन्धी कारण :

१. किसी के दान कार्य में बाधा डालना।
२. किसी के लाभ में बाधा डालना।
३. किसी के भोग (जो एक बार भोगा जाए) में बाधा डालना।
४. किसी के उपभोग (जो बार-बार भोगा जाए) में बाधा डालना।
५. किसी की शक्ति में बाधा डालना अर्थात् शक्ति को दबाना या समाप्त करना।
६. किसी को किसी अच्छे कार्य को करते समय रोकना।

७. किसी अच्छे कार्य को करने वाले को बंधन में डालना।

८. जिनेन्द्र देव आदि वीतरागी नव देवताओं की पूजा में विघ्न डालना।

९. मोक्षमार्ग के साधनों में विघ्न उपस्थित करना।

१०. पूजा में समर्पित किए पदार्थों को अर्थात् निर्माल्य को ग्रहण करना इत्यादि या मंदिर की व्यवस्था हेतु समर्पित धन, जमीन, मकान व दुकान का अन्यायपूर्वक उपयोग करना।

कर्म बंध की कुछ व्यवस्थाएँ हैं जैसे – खाया हुआ भोजन उदराग्नि के अनुसार खल भाग और रस भाग रूप हो जाता है, वैसे ही तीव्र, मंद या मध्यम रूप जैसी कषाय होती है, उसी के अनुसार कर्मों में स्थिति और अनुभाग पड़ता है तथा जैसे आतशी कांच के बर्तन में पड़े अनेक प्रकार के रस, बीज, फूल और फल गरमी को पाकर शराब (मद्य) रूप हो जाते हैं वैसे ही आत्मा के चहुँ ओर विस्रसोपचय रूप से स्थित पुद्गल वर्गणायें योग और कषाय की वजह से कर्म रूप हो जाती हैं। इसी को बन्ध कहते हैं। बन्ध के चार अंग भूत भेद हैं – प्रकृति बन्ध, स्थिति बन्ध, प्रदेश बन्ध और अनुभाग बन्ध।

प्रकृति स्वभाव को कहते हैं। जैसे नीम का स्वभाव कड़वापन है, गुड़ का स्वभाव मीठापन है। इसी प्रकार इन कर्मों में ज्ञान-दर्शन आदि आत्मगुणों को आवृत्त करने की प्रकृति स्वभाव को प्रकृति बन्ध कहते हैं। बन्ध के समय बंधने वाली कर्म-वर्गणाओं में अपने-अपने स्वभाव के अनुसार प्रकृति पड़ जाती है, इसी को प्रकृति बन्ध कहते हैं। बंधे हुए कर्म जब तक अपना फल देने की स्थिति में रहते हैं, तब तक की काल मर्यादा को स्थिति बन्ध कहते हैं। सभी कर्मों की अपनी-अपनी स्थिति होती है। कुछ कर्म अल्पकाल भर रहते हैं तो कुछ कर्म अति दीर्घकाल तक भी आत्मा के साथ विद्यमान रहते हैं। उनके रहने की काल मर्यादा को ही स्थिति बन्ध कहते हैं। बंधे हुए कर्म परमाणुओं की संख्या/ मात्रा को प्रदेश बन्ध कहते हैं। कर्मों की फल दान शक्ति को अनुभाग बन्ध कहते हैं। कर्म फल की तीव्रता और मन्दता, अनुभव या अनुभाग बन्ध से होती है। मंद अनुभाग में अल्प सुख-दुःख होता है तथा तीव्रता होने पर सुख-दुःख में तीव्रता होती है। जैसे उबलते हुए एक गिलास दूध से भी शरीर जल जाता है, किन्तु बहुत सारा सामान्य गर्म दूध को पीने पर भी वैसा कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी प्रकार तीव्र अनुभाग सहित अल्प कर्म भी गुणों को अधिक घातते हैं तथा मंद अनुभाग सहित अधिक कर्म पुंज भी गुणों को घातने में उस प्रकार समर्थशाली नहीं हो पाते। चारों कर्म बन्धों में अनुभाग बन्ध की प्रधानता है। प्रकृति बन्ध और प्रदेश बन्ध योग से तथा स्थिति बन्ध और अनुभाग बन्ध कषाय से होते हैं।

तीव्र कषाय से तीन शुभ आयु को छोड़कर शेष १४५ प्रकृतियों में अधिक स्थिति बंध होता है, कम मंद कषाय से तीन शुभ आयु में अधिक स्थिति बंध होता है, शेष १४५ प्रकृतियों में कम।

तीव्र कषाय से पुण्य प्रकृतियों में कम अनुभाग होता है, पाप प्रकृतियों में अधिक। मंद कषाय से पुण्य प्रकृतियों में अधिक अनुभाग होता है, पाप प्रकृतियों में कम।

कर्मों की बन्ध, उत्कर्षण, संक्रमण, अपकर्षण, उदीरणा, सत्त्व, उदय, उपशम, निधत्ति और नि:काचना रूप दस अवस्थायें होती हैं।

१. बन्ध - कर्मों का आत्मा के साथ सम्बन्ध होना बन्ध है।
२. उत्कर्षण - कर्मों की स्थिति तथा अनुभाग का बढ़ना उत्कर्षण है।
३. संक्रमण - कर्म प्रकृति का अन्य प्रकृति रूप परिणमन होना संक्रमण है।
४. अपकर्षण-कर्मों की स्थिति तथा अनुभाग का घट जाना अपकर्षण है।
५. उदीरणा - उदयावली के बाहर स्थित कर्म द्रव्य को समय से पूर्व से उदयावली में लाना उदीरणा है।
६. सत्त्व - बंधे हुए कर्म पुद्गल का कर्म रूप रहना सत्त्व है।
७. उदय - कर्म प्रदेशों का अपने समय को प्राप्त होकर फल देने लगना उदय है।
८. उपशम - निश्चित समय तक कर्म का उदयावली में प्राप्त नहीं होना उपशम है।
९. निधत्ति-कर्मों का, उदीरणा और संक्रमण इन अवस्थाओं को प्राप्त नहीं होना निधत्ति है।
१०. नि:काचना -जिस कर्म की उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण और संक्रमण ये चारों ही अवस्थाएं न हो सकें, उसे नि:काचना कहते हैं।

अष्ट कर्मों का नाश सद्भावना व समीचीन ध्यान से सम्भव है। जब तक ध्यान एकाग्र नहीं होता तब तक ध्यानाग्नि प्रज्ज्वलित नहीं होती, कर्मों का नाश सम्भव नहीं है। ध्यान द्वारा कर्मबन्ध से छुड़ाते हुए आत्मा को परिमल बनाकर मुक्ति मंजिल की ओर ले जा सकते हैं। जैसे सूर्य की किरणें सब जगह पड़ रहीं हैं और बहुत तेज गर्मी का समय है लेकिन वे किरणें सामान्यत: एक पेपर को भी जलाने में समर्थशाली नहीं होती हैं। जबकि पेपर धूप में पड़े रहते हैं, फिर भी धूप की किरणों से वे जलते नहीं हैं। जब उन किरणों को एक लेन्स के माध्यम से संगृहीत करके एक प्वाइन्ट (बिन्दु) पर छोड़ते हैं तो पेपर जलने लगता है। घ्यान रूपी किरणें विश्व के समस्त विषयों की ओर फैल रही हैं और न जाने कहाँ-कहाँ से सम्बन्ध जोड़े हुए हैं, इस कारण से आत्मा में एकाग्र नहीं हो पाते हैं। जिस प्रकार लेन्स के माध्यम से सारी किरणों को एक प्वाइन्ट पर छोड़ा गया उसी प्रकार निर्ग्रन्थ बन अगर सभी ओर से ध्यान को हटा करके उसे एक जगह केन्द्रित करके अपनी आत्मा पर छोड़ेंगे तो एक अन्तर्मुहूर्त में शुक्ल ध्यान रूपी अग्नि प्रज्ज्वलित हो जायेगी तब ही कर्म रूपी पेपर जल उठेगा और समस्त कर्मों के नष्ट होने से आत्मा मुक्त होकर सिद्ध गति को प्राप्त हो जायेगी तथा शाश्वत् अविनश्वर सुख हेतु लोकाग्र में जाकर सदा के लिये विराजमान हो सकती है, परमात्मा बन सकती है। इस प्रकार जैन कर्म सिद्धान्त की विशिष्ट प्रक्रिया है जो नियतिवादी व स्वछन्दतावादी नहीं है।

इत्यलं

संकलन : डॉ. श्रीमति अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर

बच्चों में बढ़ती हिंसा, कषाय : दोषी कौन?

भारतीय परिवारों की जीवन शैली में तेजी से आ रहे बदलाव का असर खान-पान और रहन-सहन पर पूरी तरह से देखा जा रहा है। इस बदलाव के चलते बच्चे अपने जीवन की शुरूआत इसी मुकाम से कर रहे हैं। आज समाज में यह ज्वलन्त प्रश्न तेजी से उभर रहा है कि मासूम बच्चे क्यों हिंसक बनते जा रहे हैं, इनका दोषी कौन है? इनका दोषी माता-पिता, टेलीविजन, भौतिकता के साधन।

बच्चों के सर्वप्रथम गुरु उनके माता-पिता ही होते हैं। माता-पिता की छाया बच्चों पर सबसे ज्यादा पड़ती है। माता-पिता को चाहिये कि वे बच्चों में शुरू से ही अच्छे संस्कार डालें, उनकी प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखें, उन्हें समय दें तथा उनकी बातों को ध्यान से सुनें। उन्हें हिंसा व मारधाड़ से भरपूर टी.वी. सीरियलों एवं गन्दी फिल्मों से दूर रखें। माता-पिता बच्चों को इतना ज्यादा लाड़-प्यार नहीं करें कि आने वाले समय में वह आपके ऊपर हावी हो जाये। बच्चे की बचपन से हर इच्छा पूरी नहीं करें जो मांगे उनको नहीं देवें, माता-पिता किसी के साथ कहीं बैठे हों तो उनका अपमान व अनादर नहीं करें जिससे लोग कहें बच्चों को कैसे संस्कार दिये हैं, जो बच्चे अपने माता-पिता, घर में बड़े गुरुजनों का आदर सम्मान ना करें वो बच्चे अपनी जिंदगी में कुछ हासिल नहीं कर सकते हैं।

''आत्मीयता''

राग भाव, मोह भाव और आत्मीयता के प्रति रिश्ते अनेक रूपों में देखने सुनने को मिलते हैं। जिनमें माँ-बेटी, देवरानी-जेठानी, सास-बहू आदि। रिश्तों की परम्परा दीर्घवती है। रिश्तों का भाव दो भिन्न व्यक्तियों, आत्माओं का बंधन है। पुराणों में यह बंधन उसी भूत में या भव-भव में भी चलता है। रिश्ते सुचारू रूप से चलते रहें तालमेल बना रहे तब तो ठीक है वरना ये ही रिश्ते कषाय भाव, बैर, दुश्मनी का उग्र रूप धारण कर लेते हैं। ''रिश्ता'' - ''सम्बन्ध'' - कोई भी क्यों ना हो वो चाहता है-

''समर्पण''

एक दूसरे के प्रति समर्पण भाव चाहिये। सास का बहू के प्रति और बहू का सास के प्रति समर्पण भाव चाहिये। कभी एक हाथ से ताली नहीं बजती, एक पहिये की गाड़ी नहीं चलती। एक सास का अपनी बहू के प्रति बेटी जैसा नज़रिया होना चाहिये। क्योंकि वो भी किसी की बेटी है। यदि सास अपनी बहू को अपनी बेटी के समान प्यार देगी तो उन सम्बन्धों में जो मधुरता आयेगी वो सुख स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा।

बहु भी अपनी सास को जन्मदात्री माँ माने, सासू नहीं। सास मेरी माँ है ऐसा परिणाम अन्तरंग की कभी कलह नहीं होने देगा। बहू सोचे कि मुझे अब अपनी जिन्दगी इसी घर में बितानी है, तो ये घर-परिवार सब मेरा अपना ही है। मैं इस घर की हूँ और ये घर मेरा। परिवार के सभी सदस्यों के प्रति स्नेह भाव, आत्मीयता का माहौल सदैव सरसता प्रदान करेगा।

- संकलन : श्रीमती सुशीला पाटनी

दिगम्बर जैनों से एक होने का आवाहान्

सुधीर जैन

आज पूरे भारत वर्ष के दिगम्बर जैनों के सामने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए एक ध्वज, एक मंच, एक आवाज के साथ जिन धर्म के तीर्थों की रक्षा सुरक्षा के लिए एक होना अति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है।

हमारे शाश्वत तीर्थ, सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी, गिरनार जी अष्टापद जी एवम् पावापुर जी अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जी केशरिया जी आदि की तीर्थवंदना करने वाले जिनभक्त यह बड़ी गहराई से महसूस करने लगे हैं कि पूर्व में हम दिगम्बरों से सामाजिक जागृति या चेतना के परिपेक्ष्य में बड़ी भूल हुई है जिससे आज हम अपनी परम्परा को अक्षुण्ण नहीं रख पा रहे हैं। इन तीर्थों में पूजा, अभिषेक, वंदना का अधिकार खोते जा रहे हैं।

आखिर ऐसी स्थिति क्यों और कैसे बनी यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण चिंतन का बिन्दु है। यदि आज भी हर समय की पुकार को अनसुना कर देते हैं तो आने वाले समय में हम अपने इन तीर्थों की तीर्थयात्राओं से दूर होते जावेगें। और अपने मूल अधिकारों को स्वयम् ही विलुप्त होने के भागीदार कहलावेंगे। हमारी भावी पीढ़ियां हमें अपने इस प्रमाद के लिए कभी माफ नहीं करेंगी।

आज हम बड़े भाव से अपने-अपने परिवारों के साथ तीर्थ वंदना को निकलते हैं जिससे कि गृहस्थ जीवन/सामाजिक जीवन के अर्जित पापों का प्रक्षालन, तीर्थ क्षेत्रों की वंदना से कर सकें। लेकिन जब तीर्थों में पहुंचकर हम अपनी परम्परा के अनुसार दर्शन, पूजन नहीं कर पाते तो मन में बहुत क्षोभ उत्पन्न होता है। क्योंकि इन सिद्ध क्षेत्रों की रख-रखाव, निर्माण या पूजन व्यवस्था में हम **दिगम्बरों के अधिकार बहुत सिमट गये हैं। अन्य मतावलम्बी वहां कब्जा जमा कर बैठ गये हैं और हम पर अनुशासन चलाने की कुचेष्ठा करते हैं। जिसकी वजह से हम पूजा तो क्या दर्शन के लाभ से भी वंचित कर दिए जाते हैं। हम सब ठगे से रह जाते हैं।**

इन परिस्थितियों के निर्माण होने में हम सिर्फ हम ही दोषी हैं क्योंकि पिछले 100-125 वर्षों में हमने अपने इन शाश्वत तीर्थों की रक्षा के लिए अपने कर्तव्य का ठीक रीति से, विचारशील बनकर, पालन नहीं किया। पूरे भारत देश में सबसे प्राचीन धर्म के अनुयायी होने के बाबजूद भी दिगम्बर जैनों की संख्या 1 करोड़ के ऊपर होने के बाद भी धार्मिक सहिष्णुता के साथ सभी धर्मों-पंथों से सामजस्य का भाव रखते हुए भी, अपने तीर्थों की सुरक्षा- रक्षा या आधुनिक निर्माण कार्य नहीं कर पाये। जैन समाज द्वारा राष्ट्र की आय में उल्लेखनीय योगदान, करों के माध्यम से दिये जाने के बाबजूद भी आज संसद में या विधानसभाओं में हमारा समानुपातिक प्रतिनिधित्व नहीं है। अहिंसा, दया मूल की दृष्टि से

सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत के उपासक होने के बाबजूद भी हमारी आवाज में कोई दम नहीं रह गया है। लोकतंत्र या प्रजातंत्र में हमें अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ना अब नितांत जरूरी हो गया हैं नहीं तो हम अपना बचा खुचा वजूद भी, समय के थपेड़ों में खो देंगें।

हम किसी भी आम्नाय से किसी भी पंथ से, किसी भी पद्धति से, किसी भी परम्परा से ''जिन देव की'' ''जिन शास्त्रों की'' ''जिनायतनों'' की पूजा भक्ति करें। णमोकार मंत्र का जाप करें या पंच परमेष्ठी की श्रद्धा भक्ति से पूजा-अर्चना करें-हम सभी जिन भक्ति से परम्परा से जिन के उपासक यानि जैन कहलाए। यही आत्मधर्म का मूल है। यही जैनों की रीढ़ है। हम सभी क्षेत्रों में चली आ रही पूजन अभिषेक की परम्परा से कोई आगमिक व अहिंसात्मक विवेक रखते हुए छेड़छाड़ न करें। क्षेत्रों में शांति का वातावरण बना रहे।

अब समय का तकाजा है कि हम सब दिगम्बर चाहे परवार, गोला पूरब, खंडेलवाल, अग्रवाल, लमेूच, पल्लीवाल, पद्मावती पोरवाल, कासलीवाल, पाटोदी हो, जैसवाल हूमण, पहाड़िया भरिल्ल, लुहाड़िया, पाटिल, शाह, बंसल, गोहिल, सेठी, काला, बड़जात्या, अवाडे, मेहता, बक्शी, रनदिवे, सराफ, बैनाड़ा, पापड़ीवाला, जौहरी, कटारिया, सोगानी, बज, बाकलीवाल, बंडी, छावड़ा, आवाडे, पांड्या, गंगवाल, गांधी, कमलकर, सिंघवी, चवरे, लोहरा, विनायका, दिवाकर, चौधरी, पटवारी, झांझरी, मोदी, गोयल, सराफ, समैया, श्रीमाल, सैतवाल, सराक, गौड़, कासार, नैनार, उपाध्ये, आदि-आदि कुल गोत्र क्षेत्र के साथ अपने अपने नामों से जाने जाते हों लेकिन **हम सभी को अपने-अपने नामों के साथ, अपने प्रचलित नामों के साथ जैन अवश्य जोड़ना चाहिये।** जनगणना के कालम में, जाति विशेष के कालम में जैन अवश्य दर्ज कराना चाहिये। **जिससे भारत वर्ष की जनगणना में हम सभी जैन अपनी सही-सही संख्या दर्ज करा सकें। वरना लोकतंत्र में प्रजातंत्र में हम जैन अपना आधार खोते जावेगें।**

जनगणना में जैन दर्ज होने के बाद ही, हमारा प्रतिनिधित्व सहज रूप से उभरकर प्रजातंत्र के ऊपर आवेगा एवम् **चुनाव प्रक्रिया में वोट डालने का अधिकार का शत प्रतिशत उपयोग करके ही अहिंसक जैन समाज-अपने प्रतिनिधि, पंचायत, विधान सभाओं एवम् संसद में भेजकर, अहिंसा के सिद्धांत पर राष्ट्र की योजनाओं को दिशा एवम् गति प्रदान करने में सक्षम हो सकेगा।** कत्लखानों, मांसाहार, मादक पदार्थों, शराब आदि का सिद्धांत विरोध अब खोखले नारों या सम्मेलनों से नहीं होगा। अहिंसा के पुजारियों को अपने वर्चस्व की लड़ाई स्वयम् अपने तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा के लिए प्रण-प्रण से लड़नी होगी - लेकिन वर्तमान लोकतांत्रिक पद्धति से।

आज हमारा सौभाग्य है कि इस दुष्काल में भी परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागर जी महाराज की परम्परा से श्रमणों आचार्यों मुनियों का सद्‌भाव है जो पूरे जैन समाज को एक

नई दिशा एवम् ऊर्जा से ओत प्रोत करने में सक्षम है ये संघ पूरे भारत के प्रदेशों में धर्म प्रभावना से पंचमकाल में भी चौथे काल सी चर्या में रत है। **यह जिन भक्त उन सभी आचार्यों, मुनिराजों के चरणवंदन करता हुआ उनसे प्रार्थना करता है कि वे सभी भगवंत हमारी बिखरी हुई, छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटी हुई दिगम्बर जैन समाज को तीर्थ रक्षा हेतु एक सूत्र में पिरो दें।**

यह भी सौभाग्य का प्रसंग है कि पूरे भारत वर्ष की प्रमुख दिगम्बर जैन संस्थाए शाश्वत सिद्ध क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों की रक्षा-सुरक्षा के लिए, दिगम्बरत्व की रक्षा हेतु एक ही विचाराधारा की पोषक है एवम् उनके पदाधिकारीगण इस पुनीत कार्य के लिए तन-मन-धन न्यौछावर करने हेतु संकल्पित हैं। तीर्थों की रक्षा एवम् संरक्षण हेतु सभी प्रयासरत् हैं। इतनी जागृति, इतनी चेतना, इतना उत्साह इसके पूर्व के वर्षों में नही दिखाई दिया, चाहे, भारतवर्षीय दिग. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, दिगम्बर जैन, महासमिति, श्रुत संर्वधिनी तीर्थ रक्षा कमेटी या महासभा या दक्षिण भारतीय दिगम्बर जैन महा संघ या भारत वर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् या अखिल भारतीय विद्युत परिषद् या भा. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, अ.भा. जैन महिला परिषद् इत्यादि अन्य प्रमुख संस्था हो - यह जिन भक्त, यह गुरुभक्त, उक्त सभी जैनों की शीर्ष संस्थाओं से, उनके संकल्पिक पदाधिकारियों से, करबद्ध प्रार्थना करता है कि नाम सह जैन लिखने, तीर्थ रक्षा करने और दुखियों की सहायता करने रूप एक संयुक्त अभियान चलाकर पूरे भारत वर्ष के **दिगम्बर जैनों को एक झंडे के नीचे लाकर खड़ा कर दें। जिससे हमारी आवाज की खोई हुई शक्ति वापस लौट आये** एवम् ''अहिंसा परमोधर्मः'' का नारा पूरे राष्ट्र में गूंजने लगे। हमारे श्री सम्मेद शिखर जी, श्री गिरनार जी, श्री केशरिया जी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जी......... की रक्षा सुरक्षा का कवच अभेद बन सके। मांस के निर्यात एवम् कत्लखानों को उद्योग का दर्जा देने वालों के कांनों में जूं रेंगने लगे एवम् प्रजातंत्र में अहिंसक समाज की राजनैतिक अवहेलना न की जा सके।

बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा, इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।
जिंदगी भरका कमाया साथ में क्या जायेगा, यह सुअवसर खो दिया तो अंत में पछतायेगा।।

सूचना

1. सिद्धक्षेत्रों व अतिशय क्षेत्रों के पहाड़ों पर कोई भी खाद्य वस्तु न खरीदें जिससे ऊपर लोग न बसें व गंदगी दूर हो।
2. हिंसक सामग्री-चमड़ा, नेल पालिस, लिपिस्टिक व सिल्क का उपयोग छोड़ें जिससे बूचड़खाने आदि बंद हो जावें।
3. सप्तव्यसन, रात्रि भोजन और बिना छने जल इत्यादि का त्याग जरूर करें जिससे रियल जैनी कहलावें।

सन्देश

इन्द्रिय विजयी सब मुनिवर वे, जित इंद्रिय कहलाते हैं।
वे जित ही जिनेन्द्र कहलाते हैं, सबके मन को भाते हैं।।

जो जिन के संदेशों को निज, जीवन में अपनाते हैं।
दया पालते जैन लिखें जो, वे जैनी सुख पाते हैं।।

- मुनिश्री आर्जवसागर

सतना की अटूट श्रद्धा ने ३४ वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त किया

आचार्य श्री विद्यासागर जी के सतना आगमन की भव्य अगवानी कर सतना निवासी व आसपास के लोग आनन्द से अभिभूत थे। आचार्य श्री अपने 24 शिष्य मुनियों के साथ दयोदय पशु सेवा केन्द्र तिधरा पधारकर गोशाला का अवलोकर कर प्रसन्नता अभिव्यक्त की और गोसेवक श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दिया। आचार्य श्री का महान अभियान 'पशु वध बन्द करो-गोशाला निर्माण करो' का गो सेवा केन्द्र अभिन्न अंग है।

सम्पूर्ण सतना नगर में स्वागत द्वारों की भरमार थी। जगह-जगह भक्त जन आरती-अर्चना, कर, अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति कर रहे थे। आचार्य श्री ने भी श्रद्धा के सैलाब को मन से भरपूर आशीर्वाद दिया। सभी जन गद-गद थे। 15 से 21 जनवरी 2010 तक सतना में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव व विश्व शांति महायज्ञ एवं त्रय गजरथ महोत्सव के मंगल अवसर पर पधारे आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भगवान महावीर के 'जिओ और जीने दो' के अमर संदेश को जीवन में उतारने की देशना दी। सम्पूर्ण पंच कल्याणक का मंगल कार्य बाल ब्र. प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया, अशोक नगर एवं सहयोगी पुनीत भैया के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। इस महामहोत्सव में पू. आर्यिका उन्नतमति माताजी ससंघ विराजमान थीं।

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में देशना दी कि 'चिराग नहीं आग जलाओं' जिससे कर्म दग्ध हो जायें। पुरुष तत्त्व की व्याख्या करते हुए आचार्य श्री ने कहा - पुरुष भी आत्म तत्त्व है उसमें भेद नहीं है जो भेद है वह आत्मा के नहीं अपितु देह के हैं। मोक्ष कल्याणक के दिन पं. सुमतचन्द्र दिवाकर ने बताया कि हमारी आपकी आत्मा के देहावसान हो जाने को मृत्यु कहते हैं। परन्तु जो आत्मा कर्मों से मुक्त हो जाती है उसे मोक्ष कहते हैं। फेरी का आँखों देखा हाल, अपनी विशेषता के साथ भोपाल का लाल कवि चन्द्रसेन और अयज जैन अहिंसा बाकल, सुना रहे थे।

गुरुवर ने अपनी अमृतवाणी में कहा कि आप सब की श्रद्धा भक्ति और उदारता को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। आपको इसका फल भी मिल रहा है और आगे भी मिलेगा। बस वीर बनना है तो महावीर सा वीर बनो। सतना निवासियों ने वर्तमान के महावीर प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी की अमृतवाणी का जी भर कर पान किया और अपने जीवन को धन्य कर लिया। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने श्रद्धा भक्ति के महल में एक-एक ईंट का कार्य किया। शुभ कार्य, शुभ चिन्तन के शुभोपयोग के माध्यम से शुद्धोपयोग की ओर उन्मुख हुए।

- सम्पादक

कुण्डलपुर के द्वार, धार्मिक नगरी दमोह में श्री 1008 कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं विश्वशांति यज्ञ महामहोत्सव 3 मार्च से 12 मार्च 2010 के बीच सानंद सम्पन्न

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ पधारे दमोह के विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ में। दमोह नगरी श्रद्धा-भक्ति के संबंध में अपनी विशेषता लिए हुए है। उसी का परिणाम यह मंगल कार्य था। जिसमें आचार्य श्री ने ससंघ पधारकर आशीर्वाद एवं देशना दी। सभी दमोह वासी कुण्डलपुर तीर्थ के रक्षक और संरक्षक हैं। फलस्वरूप वे आचार्य श्री का विशेष सान्निध्य एवं आशीष प्राप्त करते ही रहते हैं। ये उनके पुण्य का प्रताप है। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्रद्धा-भक्ति के साथ विधिवत सम्पन्न हुआ। इस मंगल कार्य में व्यय के पश्चात् बची धन राशि कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र के बड़े बाबा मंदिर में बनने वाले **सिंह द्वार** के लिए समर्पित रहेगी। ऐसा शुभ संकल्प दमोह वासियों ने घोषित किया है। विशेष रूप से कार्यक्रम के सभी पदाधिकारी व सदस्यगण धन्यवाद के सुपात्र हैं जिन्होंने इस आयोजन की व्यवस्था कर धर्म लाभ लिया और सबको भी उपलब्ध कराया-

– सम्पादक

चाबी लगने के बाद झूमरनुमा डोम दो हजार साल के लिए सुरक्षित हो गया

फाल्गुन कृष्णा-चतुर्दशी, शनिवार 13 फरवरी को प्रशस्त शुभ लग्न में संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 पूज्य विद्यासागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में कुण्डलपुर (दमोह) के श्री बड़े बाबा भगवान आदिनाथ के नव-निर्माणधीन पाषाण के मन्दिर के डोम पर आठ टन वजनी कलात्मक श्वेत संगमरमर की झूमरनुमा चाबी लगाने का ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हो गया। 'श्री बड़े बाबा' के सामने वाले खुले भाग में जहाँ आचार्य महाराज विराजमान थे, उनके एक ओर 'मयूर' संगमरमर की शिला में उत्कीण था, तो दूसरी तरफ संगमरमर की दूसरी शिला में उत्कीर्ण जैन सरस्वति विराजमान थी। कुण्डलाकार पर्वत श्रृंखला पर स्थित श्रीधर केवली की निर्वाण भूमि पर देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ भगवान की पाषाण की भव्य पद्मासन प्रतिमा जी के अनुकूल भारत के दिगम्बर जैन मन्दिरों में सबसे उतुंग, अतीव कलात्मक 171 फुट ऊँचा जिनालय तेजी से योजनाबद्ध स्वरूप ग्रहण कर रहा है। आत्मसाधक आचार्य श्री की परिकल्पना के अनुसार कम से कम दो हजार साल तक टिकने वाले इस स्थापत्य से युक्त मंदिर के अद्भुत दृश्य को आँखों में संजोने के लिए देश के कोने-कोने से हजारों-हजार श्रद्धालु उपस्थित हुए थे। आचार्य महाराज के शिष्य बालयति मुनिराजों, आर्यिका माताओं, विधानाचार्यों, ब्रह्मचारी बहनों-भाईयों तथा त्यागी-व्रतियों की इस तीर्थ मंगल धर्मधरा पर साक्षी होने का क्षण अविस्मरणीय था।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, कुण्डलपुर (दमोह) पर 'श्री बड़े बाबा' के जिनालय गर्भगृह के डोम की झूमरनुमा चाबी के स्थापना समारोह में उपस्थित भव्य आत्माओं को उद्बोधित करते हुए संयम

शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी ने कहा कि – कहा गया है जब तक 'श्री बड़े बाबा' के मंदिर के डोम तक की निर्माण सम्बन्धी पूर्ण सुरक्षा नहीं कर सकते, तब तक आगे निर्माण की अनुमति नहीं दे सकते। अब समय रहते यह काम रेखांकित कर दिया है। समाज ने धन दिया, समय दिया और मंदिर को मूर्तरूप दे दिया है। यह ऐतिहासिक काम हुआ है। सभी लोग रात–दिन काम में लगे हुए हैं। कार्यकर्ताओं का नींव से लेकर अब तक का समर्पण, भक्ति और लगन से दिया गया योगदान अभूतपूर्व है। सभी को आश्चर्य होगा। कोई कलेक्टर, पुरातत्त्व अधिकारी या अन्य के प्रतिनिधि आकर के काम को देख सकते हैं। यह तो सम्यकदर्शन की नयी भूमिका का आधार है। भाव–आराधना का कार्य है। हमें एक–एक क्षण का उपयोग करना है। बात एक ही है, हमें अपने भावों को रूप देना है। जिन–जिन ने योगदान दिया है, वह कम नहीं है। तीन–तीन ब्रह्मचारियों ने इस योजना के लिए कार्य किए हैं। तीनों का योगदान कम नहीं है। पंच कल्याणक कराते हैं, समाज को प्रेरित करते हैं। अलग–अलग स्थानों की पंच कल्याणक कमेटियों ने भी उदारता से योगदान दिया है। उनसे अन्य कमेटियों को प्रेरणा लेना चाहिए। धन की ओर न देखें, बड़े बाबा के स्वरूप को देखना है। आत्मा का साक्षात्कार हो जाएगा, तब फल मिलेगा। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। अब तो गवर्नमेन्ट को परमिशन देना ही पड़ेगी। प्रतिदिन पढ़ता रहता हूँ–यहाँ पर वीतराग भगवान को देखकर के देव लोग वन्दन के लिए उतरकर के आ जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं है, ये शास्त्रों के वाक्य हैं। हम नित्य पढ़ते रहते हैं। आगे भी जीवन को सार्थक बनाना है। यह सब गुरू महाराज आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की कृपा है।

कुण्डलगिरि, कुण्डलपुर प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई तथा अन्य पदाधिकारियों ने पूरी जिम्मेदारी से इस तीर्थक्षेत्र पर यात्रियों की सुविधा के लिए निरन्तर विकास कार्य किए है। पर्वत पर स्थित सभी मंदिरों की तथा क्षेत्र की देख–रेख पर साज–सम्हाल की गई है। 'श्री बड़ेबाबा' मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री वीरेश सेठ ने समारोह में उपस्थित भक्तजनों को जानकारी दी कि पूरे भारत में ऐसा अनुपम डोम कहीं नहीं है। जिनालय बन जाने पर अद्वितीय होगा। डोम की 12वीं लहर झूमरनुमा चाबी है, जो तीन भागों में झूमर की भांति लटकेगी। अब 'श्री बड़ेबाबा' और भी बड़े स्थान पर आकर पूर्ण रूप से सुरक्षित हो गये हैं। हम सभी छोटे बाबा आचार्य गुरुवर परमपूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज का आशीर्वाद कभी भूल नहीं पावेंगे। ऐसा दिगम्बर जैन मंदिर पूरे भारत में कहीं नहीं होगा। क्षेत्र में स्थायी प्रदर्शनी भी लगाई जावेगी, जिसमें जैन धर्म का इतिहास प्रदर्शित होगा, परिक्रमा रहेगी। यहाँ स्थापत्य की अनुपम धरोहर बन रही है, जहाँ से समाज और धर्म की प्रभावना हमेशा–हमेशा होती रहेगी। समारोह में ट्रस्ट से जुड़े 15 प्रमुख महानुभावों को सम्मान स्वरूप पगड़ी पहनाई गई। जिन्होंने आचार्य महाराज से आशीर्वाद लिया। निर्माण कार्य में परम उदार महामना श्री अशोक जी पाटनी, आर.के. मार्बल परिवार का उल्लेखनीय सहयोग मिला है। यहाँ हमारा कुछ नहीं था, ना ही है। सब कुछ प्रभु भक्ति का परिणाम है।

निर्मल कुमार पाटोदी, इन्दौर

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, एफ 108/34, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्वेश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

सत्यम जैन पिता श्री संजय जैन
बुन्देलखण्ड प्रेस, पथरिया, दमोह

द्वितीय श्रेणी

श्रीमति किरन जैन
धर्मपत्नी श्री अभिषेक जैन
मदनगंज, किशनगढ़ (राज.)

तृतीय श्रेणी

अर्पित जैन पिता श्री ललित जैन
वैशाली नगर, अजमेर (राज.)

भूल सुधार - सितम्बर 2009

प्र.क्र. 1 : भ. आदिनाथ का जन्म और मोक्ष तृतीय काल में हुआ

उत्तर पुस्तिका - दिसम्बर 2009

प्र. क्र. 1. तीर्थंकर वासुपूज्य 2. तीर्थंकर शान्तिनाथ
3. तीर्थंकर नेमिनाथ 4. भगवान अजितनाथ 5. ना
6. हाँ 7. ना 8. हाँ 9. आचार्य पुष्पदन्त, आचार्य भूतबली 10. गुणभद्राचार्य 11. आचार्य ज्ञानसागर जी
12. पंचशति : (श्रमण शतकम्, भावना शतकम्, सुनीति शतकम्, परिषहजय शतकम्, निरजंन शतकम्), चैतन्य चन्द्रोदय और धीवरोदय
13. 108 14. 72 15. 57 16. 1008 17. हाँ
18. हाँ 19. ना 20. हाँ

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन **अंक 100**

- 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र. 1. भ. आदिनाथ कितने वर्षों तक गृह में रह कर फिर निर्ग्रन्थ बने थे?
एक हजार वर्ष [ ] चौरासीलाख पूर्व वर्ष [ ] तेरासीलाख पूर्व वर्ष [ ]

प्र. 2. भ. पार्श्वनाथ स्वामी पर किसने कठोर उपसर्ग किया था?
कमठ ने [ ] कालसंवर देव ने [ ] धरणेन्द्र ने [ ]

प्र. 3. भ. महावीर को केवलज्ञान किस स्थल पर हुआ था?
चेलना नदी के तट पर [ ] ऋजुकूला नदी के तट पर [ ] गंगा के तट पर [ ]

प्र. 4. भारतीय संविधान की सुलिखित प्रति के मुख पृष्ठ पर ध्यान मुद्रा में लीन कौन से तीर्थंकर का चित्र अंकित है?
भ. आदिनाथ [ ] भ. नेमिनाथ [ ] भ. महावीर [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5. चारित्र से नहीं; मात्र ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है? [ ]

प्र. 6. मोक्ष ऊर्ध्व लोक में होता है? [ ]

प्र. 7. मुनि दर्शन भी सम्यग्दर्शन में कारण है? [ ]

प्र. 8. सम्मेदगिरि पर दिगम्बर जैनों की दर्शनीय टोंकें 25 हैं? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9. गन्धहस्ति महाभाष्य के रचयिता .... थे।
[कुन्दाकुन्दाचार्य, समन्तभद्राचार्य, जिनसेनाचार्य]

प्र.10. भद्रबाहु चरित्र के रचयिता .... थे
[रइधु कवि, रविषेणाचार्य, अमृतचन्द्राचार्य]

प्र.11. वीरोदय काव्य के रचयिता .... थे
[आ. विद्यासागर जी, क्षु. जिनेद्रवर्णी, आ. ज्ञानसागर जी]

कृपया यहाँ से निकालें

दो पक्तियों में उत्तर दीजिये -

प्र.12. चौबीस तीर्थंकरों के शरीर का कौन-कौन सा रंग था?

उ. ....

....

सही जोड़ी मिलायें - (कोष्ठक में नम्बर डालकर या लाइन मिलाकर)

प्र.13. करणानुयोग ग्रन्थ है	[ ]	35	(1)
प्र.14. रत्नकरण्डक श्रावकाचार में कथाओं की संख्या है	[ ]	गोम्मटसार	(2)
प्र.15. णमोकार मंत्र में अक्षर हैं	[ ]	तीर्थोदय काव्य	(3)
प्र.16. मुनिश्री आर्जवसागर से रचित है	[ ]	23	(4)

सही [✔] या गलत [✕] का चिन्ह बनाइये-

प्र.17. सातवे नरक में सम्यग्दर्शन हो सकता है? [ ]

प्र.18. देव अधोलोक में भी रहते हैं ? [ ]

प्र.19. भोग भूमिज जीव चारों गतियों में उत्पन्न हो सकते हैं? [ ]

प्र.20. उर्ध्वलोक में मुक्त जीवों का स्थान 45 लाख योजन है ? [ ]

कृपया यहाँ से निकालें

प्रतियोगी-परिचय

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

दानवीर, किशनगढ़

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

श्री गौतम काला, राँची

✳✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी

✳✳ सम्मानीय संरक्षक ✳✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम
● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर
● श्रीमती संगीता बजाज ध.प. श्री हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर
● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर
● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सबलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

गुना

श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया
अध्यक्ष, महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले
श्री राजीव बुखारिया

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री दिनेश चंद जैन
श्री प्रमोद कुमार जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन, हरीशंकरपुरम
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन, माधोगंज
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन, माधोगंज
श्रीमती मोती जैन, थाठीपुर
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन, थाठीपुर
श्रीमती ममता जैन, माधव नगर
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन, चेतकपुरी
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन, लोहिया बाजार
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला डोइया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोषी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री मनीष जैन लुहाड़िया
श्री धर्मचंद छावड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका बिनाक्या
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

लखनऊ
स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई
श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन

नागौर
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह

अजमेर
श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन
श्री भागचंद जी अजमेरा
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छावड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला

कुचामनसिटी
श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांडया
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांडया
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल
डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई

मुम्बई
श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.

संगमनेर, अहमदनगर
श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर
श्री महावीर प्रसाद पाटोदी

अलवर
श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमरचंद जैन

सागर
श्री मनोज कुमार जैन

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी जैन धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षण 51000/- ☐ परम संरक्षक 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे (हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code STIN0003005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

अलवर के अष्टाह्निका महोत्सव में पधारे रेनवाल के श्रावकों
का सम्मान करते हुए अलवर समाज के पदाधिकारीगण

आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला, अलवर के विद्यार्थीगण
जैन धर्म के नियमों के पालन औरपाठशाला में पढ़ने हेतु संकल्पित होते हुए

पाठशाला के कलश की स्थापना हेतु मंदिर की ओर गमन
करते हुए मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज एवं भक्तगण

भावविज्ञान पत्रिका के नवीन अंकों का विमोचन करते हुए अलवर जैन
समाज के अध्यक्ष सुशील जैन, सी.ए. और श्री एम.के. जैन, भोपाल

अलवर में अशोक जैन, जयन्ती परिवार वाले
भाव विज्ञान की सदस्यता स्वीकार करते हुए

माधव प्रसाद जी अधिष्ठाता, आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला
अलवर भाव विज्ञान परिवार से सम्मानित होते हुए।

आदिनाथ मंदिर अतिशय क्षेत्र परिसर के अध्यक्ष
चन्द्रसेन जैन भाव विज्ञान परिवार से जुड़ते हुए

अनिल जैन राखीवाला, अलवर भाव विज्ञान के सदस्य बनते हुए

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

श्री १००८ कल्पद्रुम महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ, दमोह (म.प्र.) की झलकियाँ

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज श्री १००८ कल्पद्रुम महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ, दमोह (म.प्र.) के समवशरण में गणधर के रूप में संबोधन देते हुए

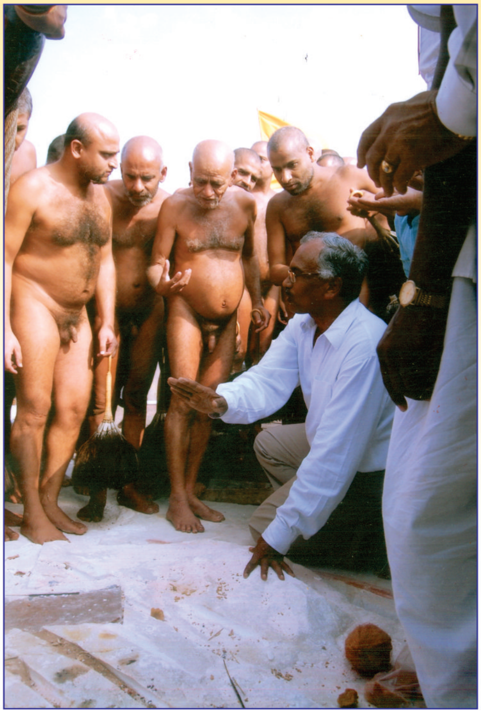

बड़ेबाबा कुण्डलपुर, दमोह (म.प्र.) में मंदिर पर शिखर के कार्य का निरीक्षण करते हुए आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ एवं मांगलिक कार्य पर प्रकाश डालते हुए अजय दनगसिया, अजमेर

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन करते हुए भक्तगण

जैन भवन, अलवर के मंदिर जी में पाठशाला के कलश की स्थापना करते हुए माधव प्रसाद जी का परिवार एवं वीरेन्द्र भैया, सांगानेर सानिध्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

पुण्यार्जक

सौजन्य से

श्रीमति वीना जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन गंगवाल

मेसर्स स्वास्तिक टाईल्स एजेन्सी

सिरामिक टाईल्स, मार्बल, ग्रेनाईट, सेनेटरी, होलसेल एण्ड रिटेलर

4, यशोदा भवन, सुन्दरराजा नगर, 100 फिट रोड, होटल जानकीरमन इन के सामने, पाँडीचेरी-605004

फोन : 0413-2204091, सुशील जैन-09443658701, अभिषेक जैन - 0984520971, रोहित जैन-09944366737

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)